'सत्गुरू न सेवयो सबद न रखियो उरधार'

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश मई, 1960 में प्रकाशित प्रवचन)

एक जाते-हक है जिसकी तरफ जितने ऋषि मुनि आये, सब इशारा देते चले गये। वह क्या है ? वह लाबयान है। वह न बयान में आ सका न आ सकता है, न उसको कोई जान सकता है, न पा सकता है। वह लय होने का मुकाम (स्थान) है। उसमें Rise into होने का, उसमें जागने का मुकाम है। कतरा समुद्र में वासिल (लय) होता है, समुद्र में समा जाता है, समाने पर भी उसका रूप हो जाता है। मगर उसकी Magnitude (बड़ाई) को नहीं जान सकता है। तो उस जाते-हक का सब ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने इशारा दिया है, जहां तक कि उनको बाहिरी लफ्ज़ों ने मदद दी, ज़बांदानी (वर्णन शैल) ने मदद दी कहो, मगर फिर भी यह कुछ बयान करते हुये, फिर भी वह लाबयान ही रहा।

सदियों फिलासफ़ी की चुनाँवो चुनीं रही। मगर खुदा की बात जहां थी वहीं रही ॥

बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, महात्मा आये, सब उसको बयान कर-कर के हार गये मगर वह ला-बयान ही रहा। न:इति, न:इति, न:इति, यह नहीं कुछ और है। यह नहीं जो कुछ तुम देख रहे हो या समझ में आ रहा है। वह मन बुद्धि के परे है। उस जाते हक को ऋषियों, मुनियों ने अशब्द करके बयान किया है। परमात्मा अशब्द है, वह जाते हक जो अभी इज़हार में नहीं आई, उस कैफियत (अवस्था) को बयान करने के लिये लफ्ज़ अशब्द बरता है, अनाम कहो, अशब्द कहो, अश्रुति कह दो, वह एक ऐसा मुकाम है। उसीको गुरू नानक साहब ने एक करके बयान किया है। ''एको ऊंकार'' एक, वह एक भी कब बना ? जब इज़हार में आया। जो इज़हार में नहीं आई चीज, वह न एक है, ना दो है। और फिर उसको बयान किया, आगे एक की तारीफ की —

एको ऊंकार सत् नाम

वह सत् है, वह अनाम से नाम, Into being आया है, Into expression आकर सारे संसार का हर्ता, कर्ता और धर्ता हुआ। और फिर वह कैसी है, क्या फना हो जाने वाली चीज़ है ? कहते है नहीं, वह सत् है, Unchageable Permanence है, लातगय्यर, लातबद्दल (परिवर्तन रहित) हस्ती है। वह सत्य कैसा है ? कहते हैं —

आदि सच, जुगादि सच, है भी सच नानक होसी भी सच।

उस सच की आगे तारीफें देते चले गये मगर जिस को एक बयान कर रहा है, इशारा

देकर, वह चीज़ अशब्द है, वह अनाम है।

नमस्तंग अनामंग

हमारी नमस्कार है उसको जिसका कोई नाम नहीं है, तो वह जब Into being वह हस्ती आई, उसको एक कहा। और फिर यह कहा —

इस एके का जाणें भेव, सोही कर्ता सोई देव।

इस एक के पीछे जो राज़ (भेद) छुपा पड़ा है, जिसको यह लफ्ज़ एक इज़हार में लाकर बयान कर रहा है, कहते हैं, उसके राज़ को जो जान जाये वह उसमें समा जाता है। अब वह चीज़ जो बयान में आ नहीं सकती वह कैसे बयान में आयेगी ? तो एक तो सत्य वस्तु है। एक फैलाव में जा रही है, हकीकत को इज़हार में ला रही है, जो इज़हार में ला रही है वह ब्रह्म है, विरह धातु से निकलता है यह शब्द, जो फैल रहा है, Into expression जा रहा है। जिसकी वह आंख खुली है, जो इज़हार में जा रही ताकत को अनुभव करता है, वह Concious Co-worker of the Divine Plan (ब्रह्म में अभेद) हो जाता है। मगर यह भी हमारा आदर्श नहीं है। हमारा आदर्श पार ब्रह्म है, ब्रह्म के परे, जो ब्रह्म का आधार है, सत्-ब्रह्म कहो, कुटस्थ-ब्रह्म कहो। उसी को सत्नाम कहा है। चीज़ एक ही है, Into expression और उसके इज़हार की डिग्री का फ़रक है। चीज़ वही है, किसी ने कुटस्थ ब्रह्म कहा, किसी ने सत्य ब्रह्म कहा। तो इतना थोड़ा ब्रह्म से पार-ब्रह्म में जाना है, और पार-ब्रह्म की यह Background बननी है, जिसको हम सत्नाम कहते हैं, और सत्नाम वह है, जो एक का इज़हार में आ रहा है। और एक जिसको इज़हार कर रहा है, वह असल अशब्द है। महापुरूषों ने इसको जरा खोल खोल कर अपने अपने तरीके से बयान किया है। जैसे-जैसे, यह कहो कि हमारी छोटी खुदी फैलकर उस शक्ति में जो सबको आधार दे रही है, उसमें फैलकर उसका रूप बन जाये या यह कहो छोटी खुदी हमारी कुर्बान होकर उस असली हैसियत में जाग उठे, वही आदर्श है। 'मैं' (अहं भावना), इतनी बढ़े कि सारी Creation (सृष्टि) उसमें, उसी के रूप में समा जाये। यह छोटी 'मैं' न रहे। जितनी खुदी Expand करेगी (फैलेगी) उतना ही सुख का कारण बनेगा। अपने आप में तुम्हारी खुदी (मैं) बढ़ती है। बच्चों को, Family men बनते हो तो कम से कम अपने आपको तुम Family (कुटुम्ब) पर कुर्बान करते हो, मगर कशमकश वही है, दूसरी Family से झगड़े हैं, साथ के चाहे भूखे मर जायें। और खुदी फैले, तो तुम्हारी समाज को Cover करती है। तुम्हारी समाज के कुत्ते भी अच्छे हैं, दूसरी समाज के महात्मा भी कुछ नहीं। वहां पाकिस्तान बने। और खुदी फैले, अपने मुल्क को घेर ले, अपना मुल्क तो अच्छा, दूसरों

के मुल्क ख़राब। यह बातें हो रही हैं तो दुख का कारण है। खुदी इतनी फैल जाये कि उसमें लय हो जाये। जितनी Expression में है, जितनी फैलती चली जायेगी, उतनी हकीकत के नज़दीक भी आती चली जायेगी और सुख का कारण भी बनती चली जायेगी। तो दो ही मार्ग हैं। या तो खुदी को इतना ऊंचा ले जाओ, इक़बाल शायर (कवि) कहता है, कि खुदी को इतना ऊंचा ले जाओ कि खुदा खुद आकर पूछे कि अरे भाई तू क्या चाहता है। Real I-hood में जागना, बाहिरी I-hood को छोड़ना पड़ेगा भई, या —

तू तू करता तू भया मुझमें रही न हू। जब आपा पिरका मिट गया जित देखां तित तूं॥

यह तो है लफ्ज़ी ज्ञान, अब जिनका अनुभव जागा, वह देख रहे हैं वही ताकत काम कर रही है। वह Conscious Co-worker of the Divine plan हैं, वह सबके अन्तर उसी को देखते हैं। वह खाता है ? कहता है भगवान खाता है। वह देता है, कहता है मैं भगवान को देता हूं।

सना नाई के मुतल्लिक जिकर आता है कि वह खाना पका रहे थे। एक कुत्ता आया। रोटी ले कर भाग चला। पीछे घी की कटोरी ले करके भागने लगे कि भगवान रूखी न खाइये। मगर यह किन लोगों की बाते हैं ? जिनकी आंख खुली है। बुद्धि के घाट पर हम हजारों बातें जानते हैं, फिर भी धोखा खाते हैं। जब तुम खुद अपनी आंख से देखने वाले हो, वही सबमें काम कर रहा है। अरे भई वह किसी कपड़े में आ जाये, किसी बाहरी शकल में हो, तुम तो उसको पहिचानते हो कि नहीं ? तो जिनकी आंख खुली है, यह सबसे बढ़ चढ़कर है। हमने अशब्द में जाना है, Into being शब्द आया है, तो शब्द पावर जो है ना, शब्दे दो हैं। गौर से सुनिये। एक बाहिरी शब्द — बाहिरी शब्द, यह बोलना, गाना, बजाना, यह जितना बाहिरी है, यह सारा शब्द है, इस शब्द का खासा है तुमको बाहर दुनियाँ में फैलाना। यह शब्द उस शब्द के आधार पर है, जो परमात्मा Into being में आ रहा है, उसको भी शब्द कहा है। परमात्मा अशब्द है, वह Into being आया उसको शब्द कहा, और शब्द की तारीफ सन्तों ने दी है।

उत्पत्ति प्रलय शब्दे होवे, शब्दे ही फिर ओपत होवे।

जिस ताकत के आधार पर यह उत्पत्ति और प्रलय हो रही है, और दोबारा सृष्टि का आगाज़ (शुरूआत) जिसके आधार पर हो रहा है, उस ताकत का नाम शब्द है। वह शब्द जो है कैसे उसका Contact मिल सकता है।

एक शब्द गुरूदेव का।

गुरूदेव द्वारे उस शब्द का Contact मिलता है। वह कहां है ? वह अदृष्ट और अगोचर

है। फैलाव में जब तक जाते रहोगे, उससे Contact नहीं आयेगा, जब तुम अन्तरमुख होओगे उससे Contact होगा। जब तक यह मन में लहरे उठ रही हैं, फैलाव में वृत्तियां जा रही हैं, वह शब्द पावर इनके घट-घट में है, मगर उससे Contact नहीं मिलता है।

जिच्चर एह मन लेहरी बिच है हौमैं बहुत हंकार।
तिच्चर सबदे साद न आयो नाम न लगो प्यार ॥

जब तक मन में लहरें उठ रही हैं काम की, क्रोध की, लोभ की, अहंकार की, कहते हैं उसको शब्द का स्वाद नहीं आयेगा। फैलाव में जा रहा है ना। अन्तरमुख होना पड़ेगा, अदृष्ट, अगोचर होना पड़ेगा, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना पड़ेगा फिर उसका Contact मिलेगा ना। जब तक उस के साथ Contact न मिले तो उसका रस नहीं आयेगा। रस नहीं आयेगा तो प्यार कैसे ? हम लोग कहते हैं, हमारा परमात्मा से प्यार है। मगर प्यार कब होगा ? जब उसका रस मिलेगा। जब देखा ही नहीं, कभी उससे ताल्लुक आया ही नहीं तो रस कहां ? जब रस नहीं तो प्रेम कहां ? हां रूचि कह सकते हो आप, शौक कह सकते हो। प्रेम कुछ और चीज है। जब अनुभव किया, झलक मिली, फिर भरोसा और विश्वास, बनता है, Faith is the root cause of all religions. श्रद्धा और विश्वास, परमार्थ की बुनियाद है, यकीन ही नहीं तो अभी परमार्थ कहां ? नामदेव का ज़िकर आया था, उसको यह विश्वास था कि मेरे नाना तो रोज भोग लगाते हैं, मेरा भोग क्यों नहीं कबूल होता ? बच्चे का दिल साफ होता है, वह चतुराईयां नहीं जानता है। वह देखता है, उसी की नकल करता है। वह कहता है इसका खाना खाता है, मेरा क्यों नहीं खाता। अरे भई नहीं खाओगे तो मैं भी फिर देख लूंगा क्या हो सकता है। तो मेरा अर्ज करने का मतलब यह है कि उस अशब्द में जाने के लिये, जो इज़हार में शब्द आ रहा है, शब्द रूप कहो, अनाम जो इज़हार में आ रहा है, नाम जिसको कहा है।

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

शब्द की भी वही तारीफ है जो नाम की है। वह भी लाबयान है। जो शब्द लाबयान है तो नाम भी लाबयान है। यह जितना इजहार है शब्द या नाम पावर का है। इसी को बयान किया है। अशब्द को किसी ने बयान नहीं किया न कर सका। Nobody has seen God with these eyes. यह सेन्ट जॉन कहता है, किसी ने इन आंखों से उस प्रभु को नहीं देखा है। जो God into expression आया है, वह ज्योति स्वरूप है। उसमें ज्योति है और श्रुति है, उद्गीत है। उसको देख भी सकते हो, और सुन भी सकते हो। मगर किन आंखों से ?

नानक से अंखड़ियां बेअन्न जिन दिसन्दो मापिरी।

ऐ नानक वह आंखे और हैं जिससे वह नज़र आता है, यह आंखें, चमड़े की आंखें नहीं। यही भगवान कृष्ण जी फ़रमा रहे हैं, तुम मुझको इन चमड़े की आंखों से नहीं देख सकते बल्कि उस दिव्य चक्षु से जो मैंने तुमको बखशी है। गुरू की हैसियत में फरमा रहे हैं। दिव्य चक्षु का खुलना, Single eye का खुलना, शिव नेत्र का खुलना, यह कब होगा ? जब आप अन्तरमुख होगे। फिर तुम उसके Contact में आओगे, उसका रस होगा, प्रेम भी बनेगा। अब शब्द का जिनको Contact नहीं मिला, बाहरी शब्द का तो सारा जहान ही Contact मानता है, कर रहे हैं, मगर यह शब्द हमें फैलाव में ले जा रहा है। एक और शब्द है जो गुरूदेव द्वारा इन्द्रियों से अतीत होकर मिलता है। उसके पाने से इन्सान बाहर से हटता है। उसमें महा-रस है। बाहरी शब्द में रस इतना है, तो अन्तरी शब्द में कितना रस होगा ? Socrates (महात्मा सुक्रात) ने कहा, कि मुझे एक आवाज़ आई, वह मुझे खैंचकर एक ऐसी दुनियाँ में ले गई जो एक नई दुनियाँ है, Unsaid और लाबयान है। वह शब्द जो है उसका आधार भी आगे अशब्द है। नाम की महिमा गाते हुये गुसाई तुलसीदास जी ने रामायण में बयान किया है कि —

कहूं कहां लग नाम बड़ाई। राम न सकत नाम गुण गाई॥

कि नाम की कितनी महिमा बयान करूं ? अगर भगवान राम भी बयान करना चाहें तो नहीं कर सकेंगे। अरे भई लाबयान को बयान में कैसे ला सकते हो ? वह जो अशब्द है उसका तो कोई ज़िकर ही नहीं। जो शब्द हुआ, जो नाम Into Expression आकर, जो सब कायनात का पसे पुश्त आधार (मूल आधार) हुआ उसको भी हम बयान नहीं कर सकते। बुद्धि एक छोटी सी चीज़, उसको कैसे अपने दायरे में ला सकती है ? वह तो अगोचर है। फिर ? मगर फिर भी ऋषि, मुनि, महात्माओं ने उसको दुनियाँ को बोध कराने के लिये, समझाने के लिये कुछ न कुछ बयान किया, ताकि उसका कुछ अन्दाजा बन सके कि कुछ है। मगर जब तक कोई अनुभवी पुरूष हमको न मिले उसका First-Hand Contact (व्यक्तिगत अनुभव) हमको न हो, हमें कभी यकीन नहीं आ सकता। सारी उमर तुम ग्रन्थ-पोथियां सुनते रहो, सारी उमर तुम, मुआफ करना, किसी अनुभवी पुरूष के साथ भी रहो, प्यार भी करते रहो, जब तक जिसने उस हकीक़त को खुद पाया है, वह हकीक़त का तजरूबा (अनुभव) तुमको नहीं देता, शान्ति सच्चे मायनों में नहीं होती। दरिया के किनारे आपको ठण्डक मिलेगी जरूर, मगर जब दूर रहोगे फिर वही गर्मी। अगर वही दरिया तुम्हारे दिल में बहने लग जाये तो शान्ति हो जाये कि नहीं ? तो महापुरूषों का हमेशा यही रहा कि अरे भई तुम शब्द के साथ लगो। शब्द कहां है ? कैसे हम उसके साथ

जुड़ सकते हैं ? जो उससे जुड़े, वह कैसे जुड़े, कौन सी चीजें रस्ते में उनके मददगार साबत हुई, कौन सी रूकावट बनी, इन बातों का निर्णय सन्तों, महात्माओं, ऋषियों के कलामों में हमको मिलता है, जो उस हकीकत के Contact में आये हैं। यह सूरज और जो कुछ बाहर नजर आता है, यह सब उसी आधार पर चल रहे हैं। वह ताकत लाबयान (अवर्णननीय) है। वाकसिद्धि करके ऋग्वेद में बयान किया है, कि मैं सबके निर्माण करने वाली हूं। वह निर्माण करने वाली जो सबकी है, शब्द Into being है, इज़हार में आया हुआ। आगे उसके दर्जे बदर्जे चलें कहां हम बैठे हैं। अब देखिये एक आत्मा है मन के आधीन, इन्द्रियों के घाट पर जिसम और जगत का रूप बनी बैठी है, कभी पिण्ड से ऊपर नहीं आई, Self Analysis नहीं किया, Into Expression इज़हार में जो ताकत आ रही है, नाम या शब्द या कलमा जिसको कहा है, उसका भी Contact नहीं मिला, तो अशब्द का क्या कहना।

इस वक्त आपके सामने श्री गुरू अमरदास जी साहब के कुछ श्लोक हैं, वक्त के लिहाज़ से रखे जायेंगे। आप देखिये वह क्या कहते हैं। भई सब महापुरूष एक ही बात कहते हैं, सिर्फ तरजे बयान (वर्णन) अपना अपना है, नफ्से मज़मून वही है। गौर से सुनिये।

सत्गुरू ना सेवेयो सबद न रखियो उरधार। धृग तिनां का जीवया कित आये संसार॥

थोड़े से लफ्ज़ों में हमारे जीवन का आदर्श बयान कर रहे हैं। फर्माते हैं, मनुष्य जीवन भागों से मिला है। यह चौरासी लाख जिया-जून की सरदार जून है। इसमें जो काम हमने करना है, जो और किसी जूनी में नहीं कर सकते, वह उस प्रभु का पाना है। प्रभु कौनसा ? जो शब्द रूप है। शब्द में लय होना है। अगर उसको नहीं पाया तो कहते हैं हमारा मनुष्य जन्म में आना किसी काम का नहीं। ''धृग आये संसार।'' धृग कहते हैं, हज़ार बार लानत है, ऐसे मनुष्य जीवन का धारण करना जिसको पाकर हमने उस हकीकत को नहीं पाया, कहते हैं उस हकीकत का इज़हार या Contact (परिचय) उसका First hand experience (व्यक्तिगत अनुभव) कहां होता है ? कहते हैं, उर में। 'उरधार' उर कहते हैं हृदय को। हृदय कौन सा है ? अब यहां पर Physical (शारीरिक) तो हृदय यहां है (छाती पर इशारा करके) सन्तों की इस्तालाह (परिभाषा) में हृदय यहां है, दो भ्रुमध्य कहते हैं, उसका Contact जब तुम दो भ्रु मध्य आओगे वहां मिलेगा। भगवान कृष्ण जी ने गीता में इसका (इस चीज़ का) Reference (हवाला) दिया है छटे और आठवें अध्याय में पढ़िये ''नासिका के अग्रभाग और दो भ्रुमध्य'', यह इशारा दिया है। रूह का ठिकाना कहा है ? Back of the eyes ! आपने मरते आदमी कभी देखें हैं ? नीचे से चक्र टूटते हैं, कंठ

बजता है, आंखे फिर जाती हैं। तुम ज़िन्दा हो। रूह का ठिकाना यहां है। यहां से सारे जिसम को सत्या (सत्ता, ताकत) मिल रही है। समझे ! फिर Drop Scene (अन्त समय) होता है, रूह जिसम को छोड़ती है, तो Last Seat (आखिरी ठिकाना) यह है। यहीं से सारे जिसम को सत्या, Enlivement (जीवन सत्ता) मिल रही है। तो कहते हैं, उर में जिसने शब्द को नहीं Contact किया — उसका Contact (परिचय) कहां मिलेगा ? उर में ! हृदय में ! पिण्ड से ऊपर आओ, इन्द्रियों के घाट को छोड़ो, अदृष्ट और अगोचर बनो, Body-Consciousness (देह ध्यास) से जिसम-जिसमानियत की तरफ से हटो, फिर तुमको उसका Contact मिलेगा। यह ठिकाना बताया है। अब आप जिसम-जिसमानियत से ऊपर कैसे आ सकते हो ? कथा ज्ञान तो हम कर सकते हैं, Quotations (धर्मग्रन्थों के प्रमाण) भी दे सकते हैं। यह तो भई Self-Analysis का (पिण्ड से ऊपर आकर आत्मा को चीन्हने का, आत्म-अनुभव का) मज़मून है।

पढ़ना लिखना चातुरी यह तो बात सहल।

पढ़ना, लिखना, विचारना, खोल खोलकर सिलसिला बयान करना, कहते हैं यह आसान बात है। कहते हैं मुश्किल बात कौन सी है ?

काम दहन, मन बसीकरन, गगन चढ़न, यही बात मुश्किल।

''काम दहन'' ब्रह्मचर्य की रक्षा, ''गगन चढ़न'', पिण्ड से Self-Analysis करके आत्मा का ऊपर आना, जड़ और चेतन का अलेहदा करना, At will transcend करना, जब चाहे पिण्ड से ऊपर आ जाना और ''मन वशीकरन'' यही बात मुश्किल है। यह तीन चीजें मुश्किल हैं। लेकचर, कथा ज्ञान, यह वह, सब करना ठीक है। तुलसी साहब ने फरमाया।

चार अठारह नौ पढ़े खट पढ़ खोया मूल। सुरत शब्द चीन्हे बिना ज्यों पंछीं चण्डूल॥

चारों वेद, अठारहों पुराण, नौ व्याकरण, छह शास्त्र, हिन्दुमत के ग्रन्थों का जिकर किया, इसके साथ और सब मतों के ग्रन्थ भी मिला लो, कहते हैं इन सबके तुम हाफिज़ बन जाओ, नोके ज़बान हो जायें (कण्ठस्थ कर लो) मगर जब तक तुम्हारी सुरत, सुरत नहीं बनती, जो इस वक्त सुरत हमारी मन के आधीन होकर इन्द्रियों के घाट पर जिसम का रूप बनी बैठी है, और Analyse करके, ऊपर आकर पिण्ड से, शब्द पावर से नहीं लगती, यह सारे पढ़ने लिखने की कीमत क्या है ? कहते हैं कि एक चण्डूल पन्छी की तरह है। उसका क्या खासा (गुण) है ? जैसी बाणीं सुनता है वैसा उच्चारण कर देता है, और बस। Practical, अनुभव सबसे ऊपर है, Feelings, Emotions and Inferences

परिणाम निकालना By Intellectual Wrestling मन-बुद्धि के आधार पर, कहते हैं, They are all subject to error इन सबमें गलती की संभावना है। Seeing is above all. जो अनुभव है ना, वह सबसे ऊंचा है। अब उस अनुभव को पाने के लिये क्या करना होगा ? अनुभव से मुराद वह शब्द पावर जो God into expression power काम कर रही है, उसके Conscious Co-worker होने के लिये क्या करना होगा ? जो Conscious Co-worker है, जो उस ताकत को काम करते हुये देख रहे हैं, वह कहते हैं —

मेरा किया कछु न हो। जो हर भावे सो हो॥

कबीर सहाब फ़र्माते हैं।

कबीर कूकर राम को मुतिया मोको नांव।

मैं राम का कुत्ता हूं भई, मुझे मुतिया-मुतिया लोग कहते हैं।

गले हमारे जेवड़ी जै खैंचे तैं जांव॥

वह इस का अनुभव कर रहे हैं, देख रहे हैं कि एक ताकत मुझे चला रही है। क्राईस्ट ने कहा कि वह पावर, वह पिता मुझमें बैठकर यह सारे काम करा रहा है। ऐसे पुरूष जो हैं ना, उनकी सोहबत में तुम भी इस अनुभव को पा सकते हो। इसीलिये कहा —

सुन सन्तन की साची साखी। सो बोलें जो पेखें आंखी॥

सन्तों की शहादत (गवाही) को सुनो, क्योंकि उनकी शहादत सच्ची है। कहते हैं क्यों सच्ची है ? कहते हैं इसलिये कि वह जो बयान करते हैं, वह देखकर बयान कर रहे हैं। हम तुम पढ़ा लिखा बयान कर रहे हैं आम दुनियाँ। कबीर साहब और एक पण्डित साहब की आपस में बातचीत हुई तो पण्डित को कहने लगे कि अरे भई ऐ पण्डित —

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे।
मैं कहता हूं आंखन देखी। तू कहता कागत की लेखी॥

कहते हैं मैं तो आंखों से देखा बयान कर रहा हूं, और तू कागज़ों का लिखा पढ़ा बयान कर रहा है। अरे भई दोनों कैसे मुत्तफ़िक होंगे। जो अनुभव है ना भई, यह सबसे ऊंचा है। अनुभवी पुरूष के पास बैठकर तुमको अनुभव होगा। किस बात का ? अपने आपका। Who you are and what you are ? इस वक्त हमको कोई पूछे कि कौन हो ? हम जिसम का रूप बने बैठे हैं। बुद्धि के लिहाज़ से तो हम बहुत ज्ञान ध्यान करेंगे, मगर पिण्ड से ऊपर आना, Analyse करके अपने आपका। जिसमानी लिहाज़ से भी अलेहदा करके कभी देखा नहीं। फिर ! तो अपने आप का अनुभव पाना, यह पहला कदम है, फिर

Overself (प्रभु) का अनुभव होगा। जब हम आप ही मन इन्द्रियों के घाट पर जिसम और जगत का रूप बने बैठे हैं, फिर ! तो कहते हैं, मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा आदर्श प्रभु को पाना है, God into Expression Power के साथ Contact में आना। वह Vibration हुई, जब हिलोर हुई ना, ''एको अहं बहुश्याम''। मैं एक हूं अनेक हो जाऊं !

एको कवाओ तिसते होय लख दरियाव ॥

लाखों Creations (सृष्टियां) Into being आ गईं (होने में आ गई) कहते हैं वह जो सत्ता इज़हार में आ रही है ना, उसके साथ Contact में आने के लिये (उससे जुड़ने के लिये) जिन्होंने उसको अनुभव किया, उनकी सोहबत में जाओ, कहते हैं, ''सत्गुरू न सेविये।'' गुरू अमरदास जी साहब सत्तर साल तक तलाश में रहे इसी चीज की। कहते हैं, गुरू तो बड़े हैं। जिससे हम सबक सीखते हैं वही गुरू है। मगर सत्स्वरूप हस्ती जो है, सत्गुरू की तारीफ़ है —

सत्गुरू सत् स्वरूप है।

जिसकी आत्मा सत् का, प्रभु का, Mouth-piece (मुख) बन चुकी है, इज़हार में आ रही है, वह मन बुद्धि के घाट पर नहीं बोलता है।

प्रभु जी बसें साध की रसना।
जैसे में आवे ख़सम की बाणी। तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो ॥

जैसे वह मालिक मुझसे अन्तर कहाता है, मैं कह रहा हूं। जिसको यह अनुभव है कि मैं नहीं, वह काम कर रहा है, कहते हैं ऐसी हस्ती हमको अगर मिली नहीं, और मिली भी है तो उसके सेवने वाले नहीं बने, मिल भी जाती है, गुरूनानक साहब जैसी हस्ती को भी कई लोग मिले, मगर कुराहिया कहते रहे। मिलना भी खाली काफी नहीं। मिलकर सेवने वाला बनो। ''सत्गुरू सेवन से बड़ भागी।'' जो ऐसे अनुभवी पुरूष से मिले हो और फिर उनको सेवन वाले हो, सेवने से मुराद जिस रस्ते वह हमको चलाना चाहते हैं, उस तरफ हम चलें। वह क्या कहते हैं ? नेक पाक बनो, सदाचारी बनो Ethical Life is a stepping stone to Spirituality. सदाचारी नेक-पाक जीवन रूहानियत के पाने के लिये पहला कदम है। यह पहली बात है। उसके साथ Self-Analysis करके (पिण्ड से ऊपर आकर) आत्मा को मन-इन्द्रियों से आज़ाद करना, अपने आपका अनुभव करके उसको, प्रभु अनुभव को पाना, यह दूसरा कदम है। तो गुरू अमरदासजी साहब फरमा रहे हैं भई अगर हमने मनुष्य जीवन पाया है, और उस शब्द को नहीं पाया, पावर को, परमात्मा परिपूर्ण कहो, Into expressions कहो, जो ज्योति-स्वरूप है, जो श्रुति है, उद्गीत है। कहां पर

वह मिलता है ? कहते हैं उर में ! अगर उर में नहीं धारण किया उसे, तो हमारा सारा जीवन व्यर्थ चला गया। ऐसे जीवन का पाना हज़ार बार लानत है। अगर हम सारी उमर ही इन्द्रियों के भोगों रसों में ही लम्पट रहे, या ख़ाहिशत के फैलाव में जा रहे हैं तो उसको पाया कहां है ? इसीलिये महात्मा बुद्ध ने कहा Be desireless. ख़ाहिशात (इच्छाओं) से रहित बनो। कहते हैं, यह कैसे हो सकेगा ? कहते हैं सत्गुरू के सेवने से हो सकेगा। चीज़ हममें है। हम उसको तलाश करते हैं वह कहां है ?

वस्तु कहीं, ढूंढे कहीं, केहि विधि आवे हाथ।

चीज़ तो कहीं हो, हम तलाश उसको कहीं और कर रहे हो, फिर ! वह हाथ में कैसे आ सकती है ? जिसको हम तलाश करते हैं, वह अदृष्ट और अगोचर है, वह अति सूक्षम और अगम है।

एवड ऊंचा होवे कोय। तिस ऊंचे को जाने सोय॥

जितना वह सूक्षम और अगम है, उतना ही हम भी अगर सूक्षम और अगम बनें फिर उसको पायें ना ! एक Level (स्तर) में होकर जान सकते हैं ना ! यह हवा में हमें कुछ नहीं नज़र आ रहा है। क्या हवा में कुछ नहीं है ? है तो सही, मगर सूक्षम है। हमारी आंख स्थूल है। या यह इतनी Magnify (बड़ी) हो, हमारी आंख के Level में आ जाये, या हमारी आंख इतनी सूक्षम बने कि इस हवा के Level में आ जाये। फिर हम देख सकेंगे। Microscope (खुर्दबीन) एक आला (यन्त्र) है। खुर्दबीन के आले से Magnify करते हैं, वह बढ़ाकर दिखाता है, एक चीज को सात सौ गुना। जब उसके बीच में से देखोगे, यह चीज सात सौ गुना बड़ी होगी। हमारी आंख के Level में आती है। इसमें कीड़े मकोड़े भरे नज़र आयेंगे, जो अब भी हैं। तो कहते हैं अगर उसके Conscious Co-worker नहीं बने, मनुष्य जीवन मिला, कहते हैं हज़ार बार लानत है। कहां पर मिलेगा ? कहते हैं उर में मिलेगा। उर कहां है ? तुम्हारे अन्तर में है। दो भ्रुमध्य है, नासिका का अग्र भाग है। इन छह चक्रों से, नीचे चक्रों को छोड़कर आज्ञा-चक्र पर आकर उसकी सूझत होती है, यह कह दो। कहते हैं वह कैसे मिल सकता है ? कहते हैं, सत्गुरू के सेवने से जिसने अनुभव किया है उसके सेवने वाले बनो, उसके चरणों में बैठो। जो वह कहता है, उसके मुताबिक जीवन बनाओ। तो सेवना क्या है ? भक्ति से, जो हुक्म दिया उस पर कारबन्द होना। एक उस्ताद है, एक बच्चा उसके पास पढ़ने को जाता है। वह उसको कहता है भई ऐसे करो, ऐसे करो, यह पढ़ो, यह सबक याद कर लो। वह उसकी (उस्ताद की) भाव-भक्ति रखता हुआ, जो वह कहता है उस पर फूल चढ़ाता है, सबक याद करके आता है। इसी का नाम सेवना है। तो कहते है, जिसको सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिली, और उसके यह

सेवने वाले नहीं बने, वह शब्द जो उर में है, उसको प्रगट नहीं कर सके, मनुष्य जीवन तो पाया, मगर व्यर्थ चला गया। हजार बार लानत है, ऐसे मनुष्य जीवन पाने पर।

मनुष्य जीवन के तीन पहलू हैं, जिस्मानियत (शारीरिक, Physical) मानसिक (Intellectual) और आत्मिक (Spiritual)। मनुष्य जीवन के अलावा और किसी जूनी में आप आत्मिक उन्नति नहीं कर सकते, न ही बुद्धि के लिहाज़ से तरक्की कर सकते हैं। इसमें (मनुष्य योनी में) विवेक है, इसमें आकाश तत्व प्रबल है जिस कारण यह सत्य और असत्य का निर्णय कर सकता है, असत्य से मुंह मोड़कर सत्य को पा सकता है। यह इसमें फज़ीलत (बड़ाई) है। अगर मनुष्य जीवन पाकर जो वह खास काम इसने करना था, आत्म-उन्नति के लिये, अपने आपका अनुभव और प्रभु अनुभव पाने के लिये, अगर सारे काम किये और यह नहीं किया तो जन्म बरबाद चला गया। कितनी ऐहमियत (महत्व) दे रहे हैं। और है भी सही। गुरू अमरदास जी सत्तर साल तक तलाश करते रहे आख़र जब गुरू अर्जुन साहब के चरणों में आकर हकीकत का अनुभव किया है बयान कर रहे हैं। एक श्लोक काफ़ी है। सवाल Digest करने का, इस चीज़ को पाने का है। वह तुम्हारे अन्तर में है। जाओ, जिसने पाया है, उसकी सोहबत में। वह आपको थोड़ा अनुभव करायेगा, इन्द्रियों के घाट से ऊपर लायेगा।

खैंचे सुरत गुरू बलवान।

कोई अनुभवी पुरूष आपको थोड़ी तवज्जो देगा, आंख खुलेगी, खुद देखने वाले हो जाओगे। अंधेरे में प्रकाश करेगा।

अंधकार दीपक प्रगासे।

अन्धकार में प्रकाश हो जायेगा। आप हैरान होंगे कि यह कैसे हो गया। है अब भी तुम्हारे अन्तर, मगर जिसम जिसमानियत से ऊपर आने का सवाल है।

सुन्न महल में दियना बारि ले।

यह कबीर साहब कहते हैं। यह अन्धेरा मकान है, इसमें प्रकाश करना है। सनातनी भाईयों में जब अन्त समय आता है, क्या कहते हैं, जल्दी करो दीवा मंसाओ। तो दीवा बनाकर हाथ पर रखते हैं, मंत्र पढ़ते हैं, जिसके मायने हैं, यह दीवा तुम्हारा सहाई हो। दीवा भी रह गया, हाथ भी रह गया। वह कौन सा दीवा है जो इसकी सहायता करता है ? Light, ज्योति है। जीते जी दीवा मन्साना चाहिये, नहीं तो बेगता मर जाता है। और वेदों में यहां तक कहा है, जो अविद्या में हैं वे मरकर अन्धकार लोकों में जाते हैं, और जो विद्या

में रत हैं वे उनसे भी ज्यादा अंधकार लोकों में जायेंगे। जितना बुद्धि का फैलाव होगा, उतना ही अन्धकार होगा। इसका यह मतलब नहीं, कि हमने बुद्धि से काम नहीं लेना है। हम सब बुद्धि से विचार कर रहे हैं, Reasoning is the help. इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होगा। इस चीज़ को समझ लिया, अब उसका अनुभव करो। शब्द तुममें है, तुम्हारे उर में है। समझे ! जिसने पाया है, उस की सोहबत संगत कर लो, जीते जी दीवा मन्सा लो, ताकि बेगते न मरो। यही आदर्श है। एक शलोक में सारा जीवन का आदर्श बयान कर दिया है।

सत्गुरू न सेवयो सबद ना रखियो उरधार। धृग तिनां का जीवया कित आये सन्सार॥

यहां तक एक जगह बयान किया है कि अगर पैदा होकर इस हकीकत को नहीं पाया तो —

तिन मात कीजियो हरि बांझा।

हे परमात्मा, उनकी माता बांझ रहती तो ठीक था। मनुष्य जीवन पाया, और जिस ग़र्ज के लिये वह पाया वही नहीं मिली तो उसके पैदा होने का क्या है। इन्द्रियों के घाट पर रहे, जन्म मरण का सिलसिला बरकरार रहा —

जननी है तो भक्त जन के दाता कै सूर। नहीं तो जननी बांझ रहो काहे गंवावे नूर॥

यह आदर्श पेश किया है। आप मुकाबला करके देखो हम लोग क्या कर रहे हैं।

गुरूमत्ती भव मन पवे तां हर रह लगे प्यार।

कहते हैं अगर गुरू मिल जाये, गुरू किसको कहते हैं ? लफ्ज़ 'गुरू' के मायने हैं, गो-रू, जो अन्धेरे में प्रकाश करे। अब आंख बन्द करें तो अन्धेरा है ना ! जो बिठाये, इस स्याही के परदे को हटाये, उसका नाम है गुरू !

परदा दूर करे आंखन का निज दर्शन दिखलावे।

कहते हैं ऐसे अनुभवी पुरूष की अगर मति को पाले, उसकी बुद्धि को अगर अख़त्यार करलो, वह क्या करता है ? परमात्मा सब परिपूर्ण है, थोड़ा वह Contact देता है, परदे को हटाता है, तुम देखने वाले हो जाते हो। वह ताकत सबमें है। यह जिसम मिट्टी का ढेर है, ख्याल करो ओहो यह तो चंद रोज़ा चीज़ है, मन्ज़िल बड़ी दूर है, मैं कहां बैठा हूं। यह भय दिल में बसता है।

गुरूमत्ती भौ मन बसै तां हर रस लगे प्यार।

फिर कुदरती बात है, वह सत्नाम अवस्था जो है, उसमें जो महारस है, अमृत है,

अमर कर देने वाली चीज़ है, उसके लिये प्यार बनेगा। जब इन चीज़ों का भय दिल में बसेगा कि यह इतनी पाक और महान शक्ति सबको चला रही है, मेरी क्या हकीकत है। यह एक चलती मशीन का एक पुर्ज़ा है। जहर सत्ता की खत्म हो गई। सारी कायनात को वह नाम पावर चला रही है, शब्द पावर कहो, उसके आधार पर वह चल रही है। जब वह सत्ता हटा ली जाती है, प्रलय और महाप्रलय हो जाती है। यह जिसम भी उसी पावर के आधार पर चल रहा है। जब वह Link हटा लिया जाता है, जिसम की प्रलय हो जाती है। जिसके दिल में, उसको अनुभव करके, गुरूमत के अखत्यार करने से, यह ख्याल पैदा होता है, वह कहता है भई इस रस को पा लो, ग़नीमत समझो। बेड़ी बह रही है, जो निकल जाये वही अच्छा। उसको फिर प्यार बनता है भई कुछ रस आया, कुछ और, कहता है भई जल्दी से जल्दी करो। Time and tide wait for no man. मनुष्य जीवन का समय जो है।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे ऐहला जन्म गवाया।

एक बार मनुष्य जीवन की पौड़ी हाथ से निकल गई यह तो मनुष्य जीवन बरबाद चला गया। फिर कब मनुष्य जीवन मिले, फिर तुम यह काम कर सकोगे। यह ख्याल प्रबल होता है। कब ? जब गुरू के पास आता है। वह कहता है, अरे भई यह चन्द रोज़ा हैं, इनका Best use करो, जिस गर्ज़ के लिये तुमको मनुष्य जीवन मिला है, उसको हासिल कर लो।

नाम मिले धुर लिखिया जन नानक पार उतार।

कहते हैं, अगर मनुष्य जीवन पाकर धुर मालिक दया करे, तब नाम की प्राप्ति होती है। नाम आपके अन्तर में है, घट घट में है।

नौ निधि अमृत प्रभ का नाम। देही में इसका बिसराम॥

पहले शब्द बयान किया है, अब नाम बयान कर रहे हैं। चीज़ वही है। और तुम्हारे अन्तर कहां है ? कहते हैं —

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा। अत रस मीठा नाम प्यारा॥

बड़ी भारी मस्ती है उसमें —

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।

कहते हैं धुर मालिक दया करे तो गुरू मिले, वह नाम के साथ जोड़े —

सत्गुरु मिले तां अखीं वेखे।

आंखों से देखने वाला बनता है। मगर सत्गुरू कब मिलता है ? जब मालिक दया करे —

कृपा करे तां सत्गुरू मेले।

और वह क्या करता है ?

हर हर नाम धियाई।

नाम के ध्याने वाला बनाता है। वह अदृष्ट और अगोचर है Self-Analysis का मजमून है। जब तक तुम उस Level पर नहीं आते — वह चीज़ अब भी तुममें है, मगर मिलती नहीं, इतनी भारी दौलत के होते हुये भी हम भूखे के भूखे रह रहे हैं।

भीखा भूखा को नहीं सबकी गठड़ी लाल। गिरह खोल नहीं जानते ताते भये कंगाल॥

जड़ और चेतन की ग्रन्थी को खोला नहीं, हम जिसम का रूप बन बैठे हैं, बुद्धि के लिहाज से तो बहुत Analysis करते हैं, सचमुच अनुभव, Practical Self-Analysis नहीं हुआ, अन्तर की आंख खुली नहीं, उसकी ज्योति को देख नहीं रहे हैं। फिर ! जीवन बरबाद चला गया। कहते हैं मनुष्य जीवन पाकर मालिक मिले, बड़े भागों की बात है।

जे बड़भागा होवे बड़भागी ताँ हरहर नाम धियाई।

बड़े भाग तो हुये हमारे, मनुष्य जीवन मिला। कहते हैं, और बड़े भाग जागें तो यह नाम के ध्याने वाला होता है। और —

जिनी नाम धियाया गये मुशक्कत घाल। नानक ते मुख उजले केती छुट्टी नाल॥

जिन्होंने नाम को धियाया है, उनकी मनुष्य जीवन की मुशक्कत सफ़ल हो गई। उनके अपने मुख मालिक की दरगाह में उजले हो गये और उनके साथ अनेकों जीवों का उद्धार हो गया।

गुरूमुख कोट अधारदा दे नावें एक कणीं।

गुरमुख से करोड़ों जीवों का उद्धार हो जाता है। वह थोड़ी सी तवज्जो देकर बिठाता है। सौ को बिठाये, सौ की सुरत ऊपर आती है, अन्तर में Light के देखने वाले हो जाते हैं, Contact दे देता है। फिर Develop करो। जैसे-जैसे उसकी हिदायत के मुताबिक चलोगे, जितना तुम्हारे दिलको उसके दिलके साथ रस्ता बनेगा, उतनी तरक्की जल्दी हो जायेगी। यह मतलब है सेवने का —

मनमुख बोलें अन्धुले तिस में अगनी का बास।
बाणीं सुरत ना बुझनी सबद न करे परगास॥

अब मनमुख जो लोग हैं ना, यह तो बतलाया उन लोगों की कैफ़ियत जो सत्गुरू के सेवने वाले बनें। जो मनमुख हैं, मनमुख की तारीफ़, लफ्जी मायने हैं, जो मन का मुंह बना

बैठा है। जो मन कहे यह करता है। मन को इन्द्रियां खैंच रही हैं, इन्द्रियों को भोग खैंच रहे हैं। भागा फिरता है बाहर दुनियाँ की लज़तों में, कुत्ते की तरह बाहरी लज़तों में ग़लतान (लीन) है। गुरू अमर दासजी साहब ने मनमुख की तारीफ़ भी की है —

से मन मुख जो सबद न पछाणैं। गुरू के भय की सार न जाणै॥

मनमुख कौन हैं ? कहते हैं, वह हैं जिनको शब्द का पता ही नहीं कि शब्द क्या चीज़ है। जो शब्द को नहीं पछाणें, शब्द अभी अर्ज किया था, वह इन्द्रियों के ऊपर है, यह इन्द्रियों के घाट का रूप बना बैठा है। उसका Contact नहीं आया, वह भी मनमुख है। जब तक वह मन इन्द्रियों के घाट पर है, शब्द का रस नहीं आयेगा। जब रस नहीं आयेगा, उसका प्यार नहीं होगा। सो इन्द्रियों से अतीत होकर ही यह चीज मिलने वाली है। जिसको कोई अनुभवी पुरूष नहीं मिला, मन के कहे, पढ़े लिखे, यह वह, विचारों पर ही चल रहा है, कोई अनुभवी पुरूष नहीं मिला, अगर मिला है, तो उसके हमादान (सर्वज्ञ) होने का ख्याल दिल में नहीं बसा कि यह समरथ पुरूष है, फिर ! ऐसे लोग सारे, जो मन कहता है, जो अपनी बुद्धि विचार कहता है, वह करता है। अनुभवी पुरूष के कहे पर नहीं कारबन्द होता। कहते हैं ऐसे पुरूष सारे ही मनसुख हैं। अब कहते हैं, ऐसे मनमुखों की क्या गति है कि वह बहरे भी हैं और अन्धे भी हैं। लफ्ज़ बड़े सख्त बरते हैं, बौले अर्थात् सुनते नहीं। किसको नहीं सुनते ? बाहर का शब्द तो सुनते हैं, अन्तर के शब्द को नहीं सुनते। समझे। अन्तर के कान नहीं खुले।

''ऐ श्रवणों मेरेयो'' — ऐ कानों बात सुनो, गुरू अमरदास जी साहब कहते हैं, ''हर सरीर लाया'' हरि ने आप को शरीर के साथ लगाया है, ''सुनों सत वाणी।'' वह बाणीं जो सत्य है, अटल और लाफानी है, उस बाणी को सुनो। कहते हैं उस बाणी के सुनने वाले नहीं, बाहर के राग रंगों में लगे पड़े हैं, अन्तर की वह बाणी नहीं सुनी। उस बाणी की फिर तारीफ दी है —

गुरू की बाणी सब माहिं समाणीं।

अब यहां पर तमीज़ हो गई, Differentiate हो गया, एक बाहरी बाणी जो सबमें समा रही है। वह अक्षर तो नहीं हो सकती ना। वही जिसको सबद कहो, नाम कहो, उसकी बाणी करके कहा।

गुरू की बाणी सब माहिं समाणीं। आप कथी ते आप बखाणी॥

उससे Outcome है, जिस पर वही (गुरू) दया करे उसको प्रगट होती है। और क्या, ''गुपती बाणी प्रगट होई।'' यह गुप्त है जैसे, ''गुप्त नाम परगाज़ा।'' करके बयान किया

है ना। है घट में, मगर गुप्त है। तो कहते हैं, यह बाणी कबसे है ?

बाणी बज्जी चौ जुगी सच्चो सच सुणाय।

यह चारों जुगों में, बाणी, बजती चली आई है। यह सच्च की ''सोह'' (खबर) हमें देती है। समझे ! फिर कहते हैं, अगर उसको सुनना चाहें कहां सुन सकते हैं ?

अन्तर ज्योति निरन्तर बाणी, साचे साहेब स्यों लिव लाये।

तुम्हारे अन्तर में ज्योति है, ज्योति में वह श्रुति हो रही है, Outcome है। अगर उसके साथ तुम लग जाओ तो सच्चे साहब से तुम्हारी लिव लग जायेगी। वह अबाणी है, अनाद है, अशब्द है, अनाम है। जब इस बाणी से, जो गुपती बाणी है, इसके साथ लगोगे तो काम बनेगा। जब तक हम इसको नहीं सुनते, हम बहरे हैं। कहते हैं जो मनमुख हैं ना, वह बहरे है, बौले हैं, और अन्धे हैं। उसमें ज्योति भी है, परमात्मा Into Expression जो है ना, Vibration है, वह ज्योति स्वरूप हैं। ज्योति को देखता नहीं, इसलिये अन्धा है। जो गुरूमुख है, वह आंखों वाला है। वह कानों वाला है। जब हम किसी सत्स्वरूप हस्ती के पास जाते हैं, पहले हम अन्धे भी होते हैं और बहरे भी होते हैं। वह जब हमें बैठाकर पिण्ड से ऊपर लाता है, अन्तर की आंख खोलता है, हम देखने वाले, हम आंखों वाले हो जाते हैं। वह हमें बतलाता है, अन्तर की उस ध्वनि को, जिसको अनहद शब्द करके कहा है, उसको सुनाता है। हम कानों वाले हो जाते हैं। मगर यह भी आदर्श नहीं मैं अर्ज करूं। यह भी Way back है उस अशब्द में जाने का, अबाणी में जाने का ज़रिया है और कोई नहीं। बातों से आप नहीं पहुंच सकते, सिर्फ ख्याली पुलाव पकाने से तुम उस चीज़ को पा नहीं सकते, क्योंकि यह सब मन बुद्धि का विचार है। और बुद्धि के स्थिर होने पर ही यह अनुभव जागता है। बाहर के शब्द से चलना है, अन्तरी शब्द को पकड़ना है। वह शब्द, अशब्द में ले जायेगा। तो कहते हैं, मनमुख कौन हैं ? कहते हैं वह सब अन्धे हैं, सब बौले हैं। इनकी (पूर्ण पुरूषों की) इस्तलाहें (परिभाषायें) हैं खास-खास, तो अन्धा किसको कहते हैं ? आप तो कहेंगे हम तो सब आंखों वाले हैं। गुरूबाणी कहती हैं नहीं भाई, तुम आंखों वाले नहीं। अन्धा कौन है ?

अन्धे से न अखियन जिन मुख लोहिन नाहिं।
अन्धे से ही नानका जे ख़समी कुत्थे जाण ॥

जो मालिक को नहीं देख रहे वह सब अन्धे हैं। दिव्य चक्षु जिनकी नहीं खुली वह सब अन्धे हैं। शिवनेत्र ही जिनकी बन्द है, वह सब अन्धे हैं। बताओ कितने आंखों वाले हैं ? इसीलिये कहा कि गुरू आंख देने वाला है, अन्धेरे में प्रकाश करता है। तो कहते हैं

मनमुख कौन है ? अन्धे और बौले हैं, ''तिस में अगनी का बास।'' उनमें काम क्रोध, ईर्षा, द्वेश, निन्दा चुगली है। ठंडक कहां आये ? राम राम कहने से, मुआफ करना, ठंडक नहीं आयेगी। जो रम रही ताकत है ना, उसकी ज्योति के साथ लगकर उस ठंडक को पा रहा है, उसके अन्तर तपश कहां रहेगी ? उसके अन्तर अहंकार कहां रहेगा ? उसके अन्तर ईर्षा, द्वेश और दूसरों का बुरा चितवन कहां रहेगा ? वह सबके अन्तर उसी को देखता है।

ख़ालक खलक, खलक में ख़ालक। लोगा भरम न भूलो भाई॥

ऐ लोगो भरम में मत जाओ, ''खालक खलक, ख़लक में ख़ालक़ पूर रहियो सब थायें।'' सबके अन्तर है। तो कहते हैं जो मनमुख हैं ना, उसकी यह गति है। वह क्या हैं ? वह अन्धे भी हैं, वह बहरे भी हैं, उनके अन्तर काम, क्रोध, ईर्षा, अहंकार, सब कूट-कूट कर भरा है। और क्या है, उसका, कहते हैं। ''बाणी सुरत न बुझनी सबद न करे प्यार'' उनकी सुरत बाणी को बूझ नहीं सकती। यह बाणी की तारीफ आ रही है। वह बाणी जिसमें ''वाकसिद्धि'' सबके निर्माण करने वाली है ना, उसमें ज्योति भी है। जो नाम और शब्द की महिमा है, वही इसकी भी है। कहते हैं, उनकी सुरत क्योंकि इन्द्रियों के घाट पर लगी है, उस शब्द को बूझ नहीं सकती है, और उस प्रकाश को देख नहीं सकती है। यह मनमुखों की कैफ़ियत बयान की है। ग्रन्थ, पोथियां बहतेरे Quote कर दिये, लेक्चर, कथा, ज्ञान यह वह, कर देंगे, मगर वह अन्दर से अन्धे हैं, अन्तर से बहरे हैं। तो फिर ! जो अनुभवी है आपको अनुभव देगा। देखिये याज्ञवल्क ऋषि राजा जनक को अनुभव नहीं दे सका, Theory समझाई है। गार्गी ने सवाल किया था उनको। दक्षिना ले गये ना, Nobel Prize कहिये, आज उस Nobel Prize की कीमत हो तो करीबन दस लाख होगी, हजार गायें और हर गाय को सोने के टुकड़े बान्ध कर खड़े किये थे। वह ले गये (याज्ञवल्क) तो गारगी, अनुभवी थी, पूछने लगी, ऐ ऋषि याज्ञवल्क ! क्या तुम उस हकीकत को देख रहे हो, जिसका तुमने ज़िकर किया है, जैसे यह चारपाये (पशु) फिर रहे हैं और तुम इनको देख रहे हो। तो कहने लगे (याज्ञवल्क ऋषि) नहीं, मैं हकीकत का देखने वाला नहीं। साफगो लोग थे। अगर आज भी लोग साफगोई से काम लें तो लोगों की मुसीबत टल जाये कि नहीं ? गुरूडम बदनाम न हो। फिर उन्होंने दुबारा सम्मेलन किया तो एक अष्टावक्र ऐसी हस्ती मिली, जो अनुभव दे सकी। उस वक्त, आपको पता है कि बड़े-बड़े जो ऋषि, मुनि, महात्मा मिल सके, सबको बुलाया। उसका बयान भी किया है कि कौन कौन थे, थोड़ों का जिकर आया है। तो किसी को यह हिम्मत नहीं पड़ी कि इस्टेज पर आ बैठे, कोई वसूक (भरोसे) के साथ आ के कहे भई बैठो। तुमको मिलेगा।

कोई कह सकता है ? वही कहेगा जो Competent (समरथ पुरूष) होगा। नहीं हिम्मत पड़ी। अष्टावक्र आये, उनका जिसम कुछ बेडौल था, आठ बल पड़ते थे उनके जिसम में, मगर थे आत्म-तत्व ज्ञानी। आकर बैठ गये। सब ऋषि, मुनि, महात्मा बड़े बैठे हैं। वह हैरान थे, इतनी देर में ज्ञान कैसे देगा ? घोड़े पर चढ़ते हुये भई बड़े थोड़े वक्त में। हंस पड़े सब। दो बातों से। एक तो बात कोई बच्चों का खेल तो नहीं। अनुभव दे सकेगा ? दूसरे यह था कि उनका जिसम भी बेडौल था। हंस पड़े। तो कहने लगे, राजन ! तुमको ज्ञान चाहिये ? कहते है ''हां''। कहते हैं फिर चमारों की सभा को क्यों इकट्ठा कर रखा है, जिनकी नज़र मेरे चमड़े पर है, मेरी आत्मा पर नहीं। यह अनुभवी पुरूष का फरक है। ऐसे ही अनुभवी पुरूषों की महिमा वेद, शास्त्र ग्रन्थ, पोथियां कर रही हैं, So-called (तथाकथित) महात्माओं की नहीं, जो आज बट्टा उठाओ तो दस हजार गुरू मिलता है। समझे !

तो कहते हैं, मनमुख कौन हैं ? मनमुख की तारीफ हो रही है। मनमुख वह है जिनको ऐसी हस्ती मिली नहीं, शब्द की कुछ समझ ही नहीं, बाहरमुखी साधनों में लगा पड़ा है, सारी उमर उसी में लगा रहा, ऐसे पुरूष का नाम है 'मनमुख' उनमें अग्नि का बास, ईर्षा, द्वेश, निन्दा, ऊपर से मत्थे टेकेंगे, हम सबके दास हैं, बीच में जड़े काटेंगे। मुंह में राम राम, बगल में छुरी। यह हालत बनी रहेगी। तो आखर क्या कहते हैं, ''बाणी सुरत न बुझनी सबद न करे परगास।'' उनके अन्तर शब्द की ज्योति प्रगट नहीं होगी, उनकी सुरत कभी बाणी को पकड़ नहीं सकती। यह मनमुख़ों की कैफ़ियत है। आलिम है या फाज़िल, कोई फर्क नहीं। इल्म आमिल के गले में फूलों का हार है। एक चीज़ को खूबसूरती से, खोल खोलकर बयान करेगा तुमको जिसमें अमल नहीं Practical First-Hand Experience नहीं (व्यक्तिगत अनुभव आत्मतत्व का) नहीं, ऐसे आलिम (विद्वान) की इल्मीयत (विद्वत्ता) शेख सादी साहब के वचनों के मुताबिक गधे का बोझ है। गुरू अमरदास जी साहब ने मिसाल दी, एक कड़छी है, हलुवे में फिर रही है। सुबह से शाम तक फिरती रहे। उसको सवाद कोई नहीं है। ऐसे ही वह आलिम है, जिसको रस नहीं है, Handle तो करता है सब ग्रन्थ पोथियां, मगर उसका रस, Contact नहीं आया, न उसकी सुरत ने शब्द को, उस बाणी को पकड़ा Self-Analysis करके (पिण्ड से ऊपर आकर) चीज़ इसमें है मगर यह बेबहरा (बेख़बर) है उससे।

उनहां अपणीं अन्दर सुध नहीं, गुरू बचन न करें विश्वास।

कहते हैं उनके अन्तर सुधि नहीं, उनको कोई Contact नहीं हुआ ना, देखा जो नहीं। कहते हैं, कोई गुरू मिल भी जाये, अनुभवी पुरूष कहे, तुम्हारे अन्तर ज्योति है, उनको

भरोसा नहीं। कैसे हो सकता है ? हमने पचास साल, बीस साल लगाये, हमें कुछ नहीं मिला। अरे भई तुमको नहीं मिला तो कोई जरूरी है कि दूसरों को भी न मिले ? देखो ना गवाही को लीजिये कि सब ऋषि, मुनि, महात्मा भी यह कहते हैं, ''गुरूमुख देखे नैनी।'' आंखों से देखता है। कौन ? जो गुरमुख हो। हम गुरू से मिले ही नहीं, गुरमुख बने नहीं, मनमुख बने रहे, हज़ार ज्ञान ध्यान छांटते रहें, मगर First-Hand Experience नहीं। जिनको है, उनको कहते हैं, यह कैसे हो सकता है ? कहते हैं, यह सब बातें हैं। उसको विश्वास ही नहीं, इसलिये यह सत्संग होता है। वह क्या करते हैं ? मुख़तलिफ़ महात्माओं से Quotation देते हैं, अरे भई फ़लाना महात्मा यह कहता है, फलाना यह कहता है, वेद भगवान यह कहता है, उपनिषद यह कहते हैं, फलाना ऋषि यह कहता है। सब एक बात कहते हैं। फिर सुनता है। कहता है, है तो कुछ चीज़ जरूर, यह अलैदा बात रही हमको नहीं समझ आ रही, समझे ? यह तो यही सवाल है कि चमगादड़ों की बैठी मजलस। कहने लगे, सूरज तीनों काल कभी नहीं हुआ। फिर ! सूरज तो है। अरे भई जो मनमुख हैं, जो इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, वह आलिम हैं, या फ़ाज़ल, वह कहते हैं कोई नहीं। और सच पूछते हो, इनको जाकर पूछो इनको विश्वास है ? देखा ही नहीं। अनुभवी पुरूष कहीं कहीं मिलेगा, हज़ारों लाखों में एक। अगर राजा जनक के वक्त एक सिर्फ हस्ती मिली, मुआफ करना, आज कोई लाखों में थोड़े हैं ? जितने ज्यादा हों खुशी की बात है, मगर अनुभवी हों। उन्हीं की महिमा है। तो बड़े प्यार से कह रहे हैं, ''उनां अपने अन्दर सुध नहीं, गुरू बचन न करें बिश्वास।'' वह अनुभवी पुरूष के वचनों पर भरोसा ही नहीं करते। वह कहते हैं, तुम्हारे अन्तर ज्योति है, यह कैसे हो सकती है ? अरे भई बैठो, और देखो। वह कोई कमीशन तुमसे थोड़े लेता है ? यह तो Gift of Nature है, Free (मुफ्त) दी जाती है। जैसे और कुदरत की दातें मुफ्त हैं, यह भी मुफ्त है। उसके कहे के मुताबिक करके देख लो। सवाल तो यह है।

जब मैं West (पश्चिम) अमेरिका वगैरह में गया ना, उनको Talks दी जाती थी, क्राईस्ट से खास तौर पर, क्योंकि वह लोग ज्यादा वाकिफ थे उनसे। और और महात्माओं से भी जो कुछ समझ आया। फिर वह सवाल करते थे। जवाब उनको मिलता था। तो दूसरे दिन कहना अच्छा भई, Come in meditation. सुबह आ जाओ बैठने के लिये। सुबह उनको तजरूबा होता था। They were convinced (उनकी तसल्ली हो जाती थी) चीज़ आपमें है भई। अन्धेरे में प्रकाश है सही, अगर आप न देखो तो कसूर किसका है ? हम अन्तरमुख खड़े ही नहीं होते। थोड़ा उभार चाहिये। बस। इस उभार के लिये हम अनुभवी पुरूष के पास जाते हैं। कोई यह नई साईन्स नहीं है। पुरातन से पुरातन

हैं, सनातन से सनातन है। मगर हम भूल गये। हम भूलते रहे, महात्मा ताज़ा करते रहे। फिर हम भूले कोई और ताज़ा कर गया। यह साईन्स न बदली है, न इसमें कोई Addition हुई है, न Alteration हो सकती है। यह कुदरत का ज्ञान है, मुकम्मल हमेशा से है, और रहेगा। न बदला है, न बदल सकता है। यह कुदरत की साख़्त (बनावट) है, Man Made (मनुष्य की बनाई हुई) नहीं।

ज्ञानियां अन्दर गुरू सबद है, नित हर लिव सदा विगास।

कहते हैं जो ज्ञानी हैं, ज्ञानी किसको कहा ? हम तो एक दो चार डिग्री ले ली ना, खास इम्तिहान पास कर लिया, ज्ञानी बन गया। इसकी तारीफ गुरू बाणीं में की है, ''ज्ञानी से जो चेतन हो।'' जो चेतन स्वरूप हो गया वह ज्ञानी है। स्वामीजी महाराज ने कहा —

चेतन रूप विचारो अपना।

जिसने Self-Analysis करके, अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों से आज़ाद करके अपने आपका अनुभव किया है, और Overself का अनुभव कर रहा है, उसका नाम ज्ञानी है, यह तारीफ सन्तों ने की है। कहते हैं जो ज्ञानी हैं, उनकी क्या कैफियत है ? उनके अन्तर वह गुरू द्वारा जो शब्द मिलता है, वह प्रगट है ''ज्ञानियां अन्दर गुरू शबद है, नित हर लिव सदा विगास।'' उसमें कशिश है मिकनातीसी, वह ज्योति स्वरूप है, उसमें बड़ी भारी श्रुति है सुरीली। बाहरी रागों में कितना असर है ? अभी सुरीली आवाज़ आये, सबकी सुरत खिच जायेगी। उस रूहानी राग में कितनी खूबसुरती होगी ? Plato (अफ़लातून) ने कहा, वह आवाज इतनी तेज़ थी कि खींच कर ऊपर मण्डलों में ले गई। Music of the spheres करके बयान किया। तो कहते हैं, उन लोगों की कैफियत (गति) ज्ञानी जो हैं ना, उनके अन्तर गुरू शब्द है, गुरू द्वारे जो शब्द मिलता है, बाहरी शब्द नहीं। बाहरी रागी, नादी, सब शब्द आपको सुना सकते हैं। कहते हैं, गुरू द्वारे जो शब्द मिलता है। उनके अन्तर (पूर्ण पुरूषों के अन्तर) प्रगट है, उसमें उनकी लिव लग रही है, और उसमें वह निवास कर रहे हैं। खुश हैं, रस आ रहा है। उसके अन्तर प्रकाश है, ज्योति को देख रहे हैं।

एक नूर ते सब जग उपजिया कौन भले को मन्दे।

वह सब में उसी की ज्योति देख रहे हैं, वह ज्ञानी हैं। इसका नाम है ज्ञानी। और जो मनसुख हैं, उनकी वह कैफियत है। यह ज्ञानियों की कैफियत है। यह कब मिलता है ? सत्गुरू को नहीं मिला, चीज़ हममें है, ग्रन्थों पोथियों में उसका जिकर है जिकर। सारी उमर पढ़ते रहो, जब तक तुम अन्तरमुख नहीं जाते, यह दौलत दबी आती और दबी चली जाती है। बाहरी ग्रन्थ, पोथियों, हीरे जवाहरात से ज्यादा कीमती हैं। यह उन अनुभवी

पुरूषों के तजरूबों (अनुभवों) के Fine Records हैं। इनके पढ़ने से हमारे अन्तर दिल में, शौक पैदा होता है। Golden Treasuries हैं यह, मगर जिस चीज़ का ज़िकर करते हैं, वह है आप में। जब तक आप अपने अन्तर दाखल नहीं होते, यह कहो Tapping Inside (अन्तर खोजते नहीं) एमरसन के कथन के मुताबिक, चीज़ दबी हुई आती है और दबी हुई चली जाती है। वह अदृष्ट और अगोचर है। है तुम में। जो अदृष्ट अगोचर हो चुका है, दूसरों को ऊपर लाने में समरथ हैं, Competent है, उसके मिलने से तुम उसका थोड़ा तजरूबा कर लो। जब कर लोगे, आगे चलो, दिनों दिन बढ़ाओ।

हरि ज्ञानियों की रखदा हौं सद बलिहारी तास।

कहते हैं कि ज्ञानियों पर बार-बार कुर्बान हैं। हरि भी उनकी रक्षा करता है। जो अनुभवी पुरूष है वह कुछ मांगता ही नहीं। वह तो ख्वाहिश (कामना) से रहित है। अगर कोई भी आये, उनकी रक्षा वह खुद करता है। हर वक्त संभाल करता है। कहते हैं, ऐसे पुरूषों पर हम कुर्बान जाते हैं। वह परमात्मा कहां है ?

सबो घट मेरे साईयां, सूनी सेज़ न कोय। बलिहारी तिस घट के जां घट परगट होय॥

वह सब में है। समझे ! कोई हृदय उससे खाली नहीं है। मगर जिस हृदय में वह प्रगट हो चुका है, उसकी सोहबत संगत में हमको प्रगट करने में मदद मिल जाती है। उन्होंने बाहर से चीज़ नहीं देनी, मगर हमारे Level को ऊंचा करता है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर, ताकि हम उसको देखने के काबिल हो जायें, First-Hand Experience (व्यक्तिगत अनुभव) है। देना है। कहते हैं, ऐसे ज्ञानियों की, अनुभवी पुरूषों की परमात्मा आप रक्षा करता है। समझे ! कहते हैं हम भाई कुर्बान हैं ऐसे लोगों पर।

गुरूमुख जो हर सेवन्दे जन नानक तांका दास।

कहते हैं, जो हरि को सेवने वाले हैं, जो गुरूमुख हैं ना वह हरि के पुजारी हैं, क्योंकि उसके Contact में आये हैं। कहते हैं, कि हम ऐसे पुरूषों पर कुर्बान हैं, उनके दास हैं सारी उमर। गुरू रामदास जी ने प्रार्थना की है —

रामा हम दासन दास करीजै।

ऐ राम ! हमको अपने, दास जो तुम्हारे बन गये हैं ना, उनके हमको दास बना लो। हम लोग क्या हैं ? हम मन इन्द्रियों के दास हैं, बाल बच्चों के दास हैं, रूपये पैसे, इज्ज़त और मान बड़ाई के दास हैं। समझे ! कहते हैं, सब तरफ़ से जिनकी तवज्जो हटी, जो तेरे दास बन गये, First-Hand Experience (व्यक्तिगत अनुभव) में आये, तुझे दू बदू देख रहे हैं, कहते हैं हम उनके दास हैं। वह कौन हो सकते हैं ? कहते हैं, गुरूमुख ही बनते हैं। भाई देखो चीज हम में है —

एका संगत इकत गृह बसते, मिल बात न करते भाई।

एक ही संगत में, एक ही घर में दो भाई रह रहे हैं, आत्मा और परमात्मा। सब ग्रन्थ पोथियां यही कहती हैं। यह हरिमन्दिर है जिसमें हम रह रहे हैं। परमात्मा की ज्योति घट-घट में विराजमान है। अरे भई कभी हमने उसको देखा है ? ''मिल बात न करते भाई।'' एक दूसरे से बात करनी नसीब नहीं हुई, कितना अफ़सोस है ! ग्रन्थ-पोथियां हमें यह कह रही हैं, कि चीज़ तुम्हारे अन्तर में है। हम इन्द्रियों के घाट के, फैलाव के जितने साधन हैं, उनमें लग रहे हैं। हम कैसे उसको पा सकेंगे ?

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं, केहि बिधि आवे हाथ।

चीज़ कहीं हो, तुम उसे तलाश कहीं और करते हो, तुम उसको कैसे पा सकते हो ? वह अदृष्ट और अगोचर है, तुम्हारे घट-घट में वास करता है, तुम्हारी आत्मा की आत्मा है। तुम उसको बाहरमुखी अपराविद्या के साधनों में सारी उमर तलाश करते रहो, कैसे मिलेगा ? इनसे फायदा उठाओ। ग्रन्थ पोथियां पढ़ो। यही कहती हैं वह कि परमात्मा तुम्हारे अन्तर में है, वह शब्द रूप है, वह नाम-रूप है, उसमें ज्योति का विकास है, उसमें प्रणव की ध्वनि हो रही है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर मिलता है। जिन्होंने पाया है, उनकी सोहबत अखत्यार करो, अन्तर की आंख खोलो, तुम्हारा काम बन जायेगा। जिसने मनुष्य जीवन पाकर इस गति को पाया, उसका जन्म धन्य हो गया, सफल हो गया, जिन्होंने नहीं पाया उनका दुनियाँ में आना किसी काम का नहीं। हज़ार बार लानत है। गुरू अमरदास जी साहब फ़र्मा रहे हैं।

माया भुयंगम सर्प है जग घेरिया बिख भाये।
बिखका मारण हरनाम है गुरू गारड़ सबद मुख पाये।

कहते हैं माया एक नागिनी है, माया भुयंगम सर्प है, ''जग घेरिया बिख भाये।'' सारे जगत को घेर रही है, और इसकी ज़हर फैल रही है। माया किसको कहते हैं ? कहां से शुरू होती है ? माया नाम है भूल का। कहां से शुरू होती है ? शरीर से !

एह शरीर मूल है माया।

हम जिसम के चलाने वाले थे, जिसम का रूप बन गये। यही माया है। जिसम से माया शुरू होती है, भूल। हम इसके मकीन (निवासी) थे मकान का रूप बन गये। यही माया है। अब मकान के Level से सारी दुनियाँ को देख रहे हैं। सब भूल में गये कि नहीं ? सारा Angle of Vision (दृष्टिकोण) ही बदला जब आप पिण्ड से ऊपर आ गये। कोई महात्मा मिल जाये, आपको जड़ माया से ऊपर ले आये, शरीर रूपी, जिसम-जिसमानियत से

ऊपर ले आये, अन्तर की आंख खुले, दुनियाँ के देखने वाली आंख ही बदल जाये।

माया होई नागनी जगत रही लिपटाये। जो इसको सेवंदे फिर तिस ही को खाये॥

सर्पनी का कायदा है, जब बच्चे जनती है, तो कुण्डल मारकर अपने बच्चों को आप खाती है। जो भाग जाते हैं, वह बच जाते हैं। यह बयान किया जाता है। कहते हैं, ऐसे ही सारा जहान माया का पुजारी है, फैलाव का। बाहिरी भूल में जा रही है सारी दुनियाँ। यही इसको खाने का सामान है।

गुरमुख बिरला गारडू जिन मन तन लाई आये।

कोई विरला गुरूमुख, अनुभवी पुरूष जो है, उसके सन्मुख बैठने वाला जो है, वह इसको पांवों के नीचे रौंदता है। इसकी भूल में नहीं जाता। तो यही यहां फरमा रहे हैं कि ''माया भुयंगम सर्प है जग घेरिया बिख भाय।'' सारे जगत को घेर रखा है, सब इसी भूल में जा रहे हैं, जिसम-जिसमानियत, बाहिर फैलाव में जा रहे हैं। अन्तरमुख, अपने आपकी तरफ़, कभी नज़र आई ही नहीं। तो कहते हैं ऐसे पुरूषों की क्या गति है ? कहते हैं ''बिख का मारण हर नाम है गुरू गारड सबद मुख पाये।'' यह जहर माया की, जो भूल में हम सब जा रहे हैं, इसका इलाज क्या है ? इसका मारण कौन सा है ? इसके Action को Nullify (खत्म) कौन सी चीज़ कर सकती है ? कहते हैं, वह नाम, जिसको शब्द कहा ऊपर, बाणीं कहा, अब फिर उसी को नाम कहते हैं, जिसका अनुभव इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर मिलता है, अदृष्ट और अगोचर है ना ! यह माया कहां से असर पाती है ? इन्द्रियों के घाट से ! बाहरी ख्याल फैलाव में तभी जाते हैं ना। हम बाहर का, जगत का रूप बन जाते हैं। जब रोज हम इससे ऊपर जाने लग जाये और नाम की ज्योति को पाने वाले हो जायें तो इस भूल से निकल जायेंगे कि नहीं ? माया फिर उनकी आंखों पर परदा नहीं डाल सकती है। Clear-cut (स्पष्ट और साफ़) वह देखते हैं चीज़ को। कहते हैं, बिख को, इसको मारने वाली चीज़ कौन सी है ? ''गुरू गारडू सबद मुख पाये।'' शब्द का गारडू हमारे शब्द को साथ अन्तर में प्रगट करे। गारडू आपको पता है क्या करता है ? जहर को खाता है, सांप की जहर को खाता है। तो माया को मारने के लिये, हटाने के लिये कहो, नाम और शब्द की कमाई है, जो अन्तरमुख है, इन्द्रियों के घाट से अतीत होकर मिलती है। किन लोगों की सोहबत में ? जिन्होंने इस हकीकत को पाया है। और दूसरों को देने की समरथा है। नहीं तो सब दुनियाँ पढ़े, लिखे, अमीर, ग़रीब, हाकिम महकूम, सब एक ही भूल में जा रहे हैं। समझे !

जिनको पूर्व लिखिया तिन सत्गुरू मिलिया आये।
मिल सत्गुरू निर्मल होया बिख हौंमैं गया बिलाये।

कहते हैं मनुष्य जीवन पा कर जब बड़े ऊंचे भाग जागें फिर सत्स्वरूप हस्ती आकर मिलती है। समझे !

कृपा करे तां सत्गुरू मेले।

जिस के अन्तर ख़ाहिश है, There is food for the hungry and water for the thirsty (भूखे के लिये रोटी है, प्यासे के लिये पानी है) जहां आग जलती है, वहां ऑक्सीजन मदद को आती है, जहां तड़प है वहां परमात्मा सामान करता है, किसी मिले हुये को मिला देता है, जो सत्स्वरूप है। कहते हैं जिसके बड़े ऊंचे भाग जागें, सत्गुरू आकर मिलते हैं उसको। जब वह मिलते हैं तो क्या करते हैं ? ''मिल सत्गुरू निर्मल होया बिख हौमें गया बिलाय।'' मैं-मेरी, हौमैं की जो ज़हर, जो सारे जहान को चढ़ी पड़ी है, वह ज़हर दूर हो जाती है। असलियत में जाग उठता है। जिसम-जिसमानियत की, जो देहध्यास की ''मैं'' लिये खड़ा है, वह मिट जाती है। समझे ! और इन्द्रियों की आलायशें (मलें) जहां इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर नाम, जो पतित पावन है, उसके साथ लगा, उसके साथ लगकर पवित्र आत्मा बन जाती है, सब आलायशों (विकारों) से रहित हो गया ना, Unalloyed हो जाता है। यह सत्गुरू के मिलने का फल है, यह काम है उसका। उसके मिलने से क्या मिलता है ?

हौमैं ममता सबद जलाई। गुरूमुख ज्योति निरन्तर पाई॥

गुरूमुख होने से हौमैं और ममता का नाश हो जाता है। कैसे ? उस ज्योति के साथ लगने से जो घट-घट में है, प्रगट हो जाती है। फिर हौंमें की तारीफ़ गुरू नानक साहब ने श्री आसाजी की वार में इसको बड़ा खोल खोलकर बयान किया है।

हौं विच आया हौं बिच मुआ।

यह बयान करते हुए आखिर क्या कहते हैं —

हौमैं दीरघ रोग है दारू भी इस माहि।

हौमैं ला-इलाज बीमारी है, और इसका इलाज भी उस परमात्मा ने इसके साथ ही रखा है। पहाड़ों में जाओ ना, वहां एक बिच्छू बूटी होती है। वह जहां लग जाये, बड़ा बिच्छु की तरह काटती है। साथ ही एक साग होता है, वह लगा दो, दर्द दूर हो जाती है। अरे जहां हौमैं रहती है, वहां इलाज भी साथ ही है। शब्द और नाम। गुरू मिल जाये, उसके

साथ जोड़ दे, हौंमैं तो, सारा आने जाने का कारण ही हौंमैं है, या इसकी मैं मिट जाये, उस ऊंची ''मैं'' में जाग उठे या मैं न रहे, तू में समा जाये, तब काम बने आना जाना खत्म हो। अब आप देखिये हम ''मैं'' को कैसे भूल सकते हैं ? खुदी (अहं) के भी दर्जे हैं। जिसम-जिसमानियत, सूक्षम, कारण यह परदे हैं। इसके साथ देह-ध्यास बना रहता है, स्थूल सूक्षम और कारण। उसकी महवियत के लिये ज्योति है या श्रुति है घट-घट में। उसको सुनकर लय होता है, सब भूल जाता है। और यह दौलत घट-घट में है। मिलती कब है ? जब सत्गुरू मिले, नहीं तो दबी हुई आती है, दबी हुई चली जाती है। मनुष्य जीवन बरबाद चला जाता है। कहते हैं, बड़े ऊंचें भाग जागें, कोई सत्स्वरूप हस्ती मिल जाये। गुरू नानक साहब पहली पादशाही से पूछा गया कि महाराज ! आपने नाम की बड़ी महिमा गाई है, यह कहां से लें हम ? तो कहा —

जहाँ नाम मिले तैं जाओ।

यह नाम है भई, जहां से मिलता है जाओ, ले लो, नाम की तारीफ करदी ना —

जेता कीता तेता नांव। बिन नांवे नाहीं कोई थांव॥

जितना किया हुआ पसारा है यह सब नाम का है। कोई ऐसी जगह नहीं जहां पर वह न हो। कहते हैं, यह नाम है, जाओ जहां से मिलता है ले लो। सामने यह चीज़ है। फिर आगे कहते हैं, कैसे मिलेगी यह चीज़ ?

गुरू परसादी कर्म कमाओ।

किसी अनुभवी पुरूष की कृपा से यह कर्म कमा सकते हो। अपने आप कर सकते हो तो कर लो, कौन कहता है न करो। न कर सको तो जाओ। जो लोग सिर्फ किताबों में पढ़े-पढ़ायें से या बाज़ वक्त किसी तरह थोड़ा Reaction (पुरबले संस्कारों का प्रभाव) अनुभव होता है, वह जाग उठता है, मगर आगे जाने को कोई रास्ता नहीं। ग्रन्थों पोथियों में उसका जवाब ढूंढता है। आमिल (अनुभवी) पुरूष को तो पता है ना, देखा है ना। जवाब होता भी है, मगर नहीं मालूम कहां लिखा है। तो हम ग्रन्थ-पोथियां पढ़ भी सकते हैं, मगर बुद्धि के खाली विचार से, उसके Right Import (सही मायने) को नहीं समझ सकेंगे, जब तक किसी अनुभवी पुरूष से न पढ़ेंगे। अनुभवी पुरूष से सुनेंगे, वही बाणी कुछ और समझायेगी, Right Import (ठीक अर्थ) समझ आयेगा। समझ आ जाये तब तो बात हुई ना, नहीं तो पढ़ते रहो। कई भाई खाली पढ़े-पढ़ाये पर शुरू हो जाते हैं, किसी न किसी से। क्योंकि यह Practical (करनी का) मजमून है, कहीं मुसीबत बन गई किताब, मुआफ करना, ढूंढ तो सकता नहीं कहां लिखा है, तो वह भागते हैं किसी आमिल के पास,

महाराज यह तकलीफ हो गई। अरे भाई फिर टकरें मारकर भी किसी आमिल के चरणों में जाना है, पहले ही दिन क्यों न उसी के चरणों में चलो, जितने कदम उठाओ ठीक रस्ते में उठाओ, मुसीबत में गिरफ़तार न हो। बाहर दुनियाँ के काम सीखते हो तो किसी न किसी माहिर के पास जाते हो, अरे भई ऐसा काम जिसका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाकर है, उसके लिये किसी की ज़रूरत नहीं ? और एक बात। जो हम ग्रन्थों पोथियों पर एतबार (विश्वास) करते हैं उसके पढ़े पर तो हम कहते हैं यह ठीक है। अरे भई जिन्होंने ग्रन्थ पोथियां बनाई, उनको ढूंढो। Practical (करनी का) मजमून है ना। ग्रन्थ पोथियों की हम क्यों इज्ज़त करते हैं ? यह अनुभवी पुरूषों के कलाम हैं। उन्होंने पाया उन्होंने जिकर किया। एक और पुरूष है जिसने उस चीज़ को, जिसका जिकर है उसका अनुभव किया है, अरे भई उसी के पास सीधे क्यों नहीं चले जाते ताकि आपको ग्रन्थ पोथियों की भी ठीक समझ आये। जिस चीज़ का जिक्र है, वह आपमें है। उसका तजरूबा भी आपको मिल सके।

मिल सत्गुरू निर्मल होया, बिख हौंमैं गया बिलाये।

माया की जहर भी न रही, हौंमैं भी न रही और पाक-पवित्र, साफ, पवित्र बन गया। ''हम नीच ते ऊत्तम भये भाई''। गुरू अमरदास जी साहब एक जगह फ़रमाते हैं, अरे भई हम भी तुम्हारी तरह कभी इन्द्रियों के घाट पर थे, अब उत्तम पदवी को पा गये। इकरार कर रहे हैं, अहंकार नहीं, इकरार कर रहे हैं, कभी हम ऐसे थे जैसे आप हैं, मगर अब नहीं। कब से ?

जब ते गुरू मत बुद्ध पाई।

गुरू की मति जब से मिली है उस दिन से, अब हम इन्द्रियों के घाट के आलूदा (मलीन) नहीं हैं, हम इसके ऊपर हैं। अरे भई वह पा सकते हैं, यह क्यों बयान करते हैं ? उनका मतलब यह है कि अरे भई हम भी तुम्हारी तरह कभी इस तरह थे। There is hope for everybody. जो भी चलेगा पायेगा। यह शरतें हैं। लिवाजमा है। यह पूरा होगा जब गुरू मिले, यह गुरूमुख बने, वह (गुरू) अन्तर की आंख खोलकर इसको Contact दे, यह उसके सेवने वाला बने, उसके कहे के मुताबिक काम करे, उसकी आज्ञा पर चले तो अवश्य, जैसे दो और दो चार होता है, उसे अनुभव मिलेगा। जो आज एम.ए. में है, वह कभी पहिली में पढ़ रहा था। जो आज पहिली में पढ़ रहा है, अगर उसको उतनी ही मदद, उतनी ही हिदायत मिल जाय, वह भी एम.ए. हो सकता है। यही एक बड़ी फज़ीलत (बड़ाई) है सन्तों में। वह यह नहीं कहते कि हम आसमानों से गिरे हैं। वह कहते हैं हम

भी भई तुम्हारी तरह थे। जिस गति को हमने पाया है, तुम भी पा सकते हो। वह भाई बनकर, हमको भाई करके पुकारते हैं, Equality (समानता) के लिये। वह नहीं कहते हम सीधे आसमानों से गिरे हैं। वह कहते हैं हम भी तुम्हारी तरह हैं। हमें एक चीज़ मिली है तुम भी ले लो।

गुरमुखां के मुख उजले हर दरगाह शोभा पाये।
जन नानक सदा कुर्बान तिन जो चले सत्गुरू भाये॥

कहते हैं जो गुरूमुख हो गये, किसी अनुभवी पुरूष के सन्मुख बैठने वाले हो गये, उसकी हिदायत पर चलकर उस रस्ते में कामयाबी हासिल कर गये, उनके मुख मालिक की दरगाह में उजले हो गये। अरे भई दुनियाँ में भी उनका मुख उजला है।

सच्चे मार्ग चलदियां उसतत करे जहान।

सारा जहान तारीफ़ करता है। खाली नेक पाक Character हो, दुनियाँ आपके पांवों के नीचे आंखें बिछाने को तैयार है। अरे भई तुम अनुभवी हो तो फिर क्या कहना ! इसीलिये कहा, जहां-जहां उन्होंने कदम रखे वह तीर्थ स्थान बन गये। यह महिमा है। तो कहते हैं, जो गुरूमुख बन गये उनके मुख उजले हो गये दुनियाँ में भी परलोक में भी, परमात्मा की दरगाह में भी। कहते हैं ''जन नानक सदा कुरबान तिन जो चले सत्गुरू भाये।'' कहते हैं हम उन पर कुर्बान हैं, जिनको सत्गुरू मिल गये और उनकी वह रज़ा पर, इशारे पर चल रहे हैं, मनमुखता में नहीं जाते, जो गुरू कहता है वह उसके लिये वेद है, वह श्रुति है, वह सब कुछ है। उसी रज़ा में चलता है। हमें परमात्मा की रज़ा में जाना है। परमात्मा को देखा नहीं, उसकी रज़ा का क्या पता लगता है ? गुरू उसकी रज़ा को जानता है, उसके अन्तर प्रगट है, गुरू के अन्तर, वह उसकी रज़ा को देख रहा है। अगर हम उसकी रज़ा में चलें तो हम प्रभु की रज़ा में हो गये। कहते हैं, हम उन पर कुर्बान हैं, जो सत्स्वरूप हस्ती के इशारे पर, कहे पर, अपना जीवन बनाते हैं। हम लोगों को ऐसी हस्ती मिलती भी है, मगर हम अपने मन की दखल देते हैं। उतना ही मानते हैं जितना अपना मन माने। अपनी हिकमत हुज्जत को बीच में रखते हैं। नतीजा क्या है ? तरक्की नहीं होती, रूकावट बन जाती है। जो सत्गुरू की रज़ा में चलने वाले हैं, कहते हैं हम उन पर कुर्बान हैं।

सबद मरे सोई जन सिझैं। बिन सबद मुकत न होई॥

कहते हैं जिनकी आत्मा उस सबद पावर में लय हो गई वही कामयाब (सफल) हो गये, हकीकत को पा गये, उनका जीवन सफल हो गया। जिनको शब्द नहीं मिला उनकी आत्मा

उसमें नहीं लगी, कहते हैं वह मुक्ति को नहीं पा सकते हैं। शब्द और नाम से ही मुक्ति है ना, सारे महापुरूष कहते हैं। अक्षरी नामों में तो रहे, मगर अक्षरी नाम जिसको बोध करा रहे हैं, उसके साथ नहीं लगे। पानी पानी, जल जल, वाटर वाटर, आब आब, तो सारे कहते रहे, मगर कहने से प्यास नहीं बुझती। यहां से चलना है। यह पहला कदम है। इससे आगे चलो। जिसको यह अक्षर बोध करा रहे हैं उसके साथ लगो, शान्ति मिलेगी।

भेख करे बहु कर्म बिगुत्ते भये दूजे परज बिगोई।

कहते हैं ''भेख करे बहु कर्म बिगुत्ते।'' बाहरी भेख बना लिया, एक या दूसरा या तीसरा, किसी ने नीले कपड़े पहन लिये, किसी ने सफेद, किसी ने पीले, बाहरी बनावट, कोई जटाजूट हो गये, कोई कुछ हो गया, बाहरी भेख बना लिया। और कई कर्मों में परवृत्त रहे। जन्म खराब कर गये। अपराविद्या में, बाहरी बनावट ही में रह गये ना ! कहते हैं, वह अपना जन्म बर्बाद कर गये।

बहु भेख किया देही दुखदिया सबै जीया अपना किया।

यह गुरू नानक साहब फरमाते हैं। भेख बनाने से नहीं, तुम एम-ए पास बनो, चाहे नीले कपड़े पहन लो, चाहे पीले पहन लो, चाहे सफेद पहन लो। That makes no difference (इससे कोई फर्क नहीं पड़ता) एम-ए बनो भई, अनुभव को पावो, किसी कपड़ों में चले जाओ। एक आदमी हो, Suited Booted हो मुआफ करना, हाथ में छड़ी भी हो, टोपी भी हो, कुत्ता भी साथ लिये फिरता हो, किताब भी बग़ल में मारे हुये हो, क्या तुम उसको प्रोफेसर बना दोगे ? बनावट का तो सवाल नहीं है। यह रहनी का सवाल है।

रहनी रहे सोई सिख मेरा। सो साहेब मैं तिसका चेरा॥

वह खदर के कपड़े पहनकर एम.ए. को पढ़ा सकता है कि नहीं ? पढ़ाने की लियाकत होनी चाहिये। उस चीज़ को पाने वाला होना चाहिये। असल बात तो यह है। कहते हैं, इस दुनियाँ में भेख, बनावट ही में, सारी उमर बनावट ही में रह जाता है। कोई सफेद कपड़े लम्बे पहन लेता है, कोई एक शकल बना लेता है, कोई दूसरी बना लेता है, अरे भई भेख और Propaganda से यह चीज नहीं मिलता। हम दुनियाँ को धोखा दे सकते हैं, परमात्मा को धोखा नहीं दे सकते हैं।

लोग पतीने कछु न होवे नाहीं राम अयाना।

लोगों के पतियाने से अरे भई कुछ नहीं होगा। परमात्मा कोई बच्चा नहीं कि तुम्हारे दोखे में आ जाये। वह ताकत जो घट में बैठी है, वह अभुल्ल है। जब तक हम को Fit

(अधिकारी) न देखेगी, कभी रस्ता नहीं देती है। यह अनुभवी पुरूषों की महिमा है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, असल कारण क्या है, इसमें अब इशारा है, गुरू अमरदास जी का अपने जीवन के तजरूबे का। 70 साल तक कई साधुओं और सन्तों, भेखों से मिले होंगे, क्या कुछ नहीं किया होगा ? कहते हैं भई हकीकत को नहीं पाया तो भेख किस काम का ? भेख तो एक चिन्ह थे, चिन्ह मुआफ करना दिखलाने के लिये कि इसकी गति कहां तक है। किसी ने एक लाईन यहां डाली किसी ने दो डालीं, किसी ने तीन डालीं, किसी ने इधर डाले, उधर डाले कि इसने इस रस्ते से इतना तय किया, उतना निशान लगा दिया ताकि लोगों को पता लग जाये। अरे भई अब बनावट में तो दो घंटे लगा देंगे, पिण्ड से कभी ऊपर नहीं आये, बताओ करेंगे क्या ? बाहर अग्नि ताप ली, बायें दायें, आगे पीछे, पांच अग्नि के तापने वाले बन गये, जो पांच अगनी अन्तर जग रही है, उस ज्योति की, पांचों Planes (मंडलों) पर, उसका राज़ (भेद) नहीं मिला, जन्म बर्बाद हो गया। असल बात कुछ और थी। लकीर की फकीरी रह गई। हकीकत को पाओ, असल कीमत हकीकत की है।

भेख करे बहु कर्म विगुत्तें भये दूजे परज बिगोई।
बिन सत्गुरू नाव न पाइये जे सौ लोचे कोई॥

अब कहते हैं, भई जब तक सत्स्वरूप हस्ती न मिले, नाम की प्राप्ति नहीं। नाम की तारीफ हो चुकी है। वह एक Self-Analysis (पिण्ड से ऊपर आने) का मजमून है। जिसम-जिसमानियत से ऊपर आकर, अदृष्ट और अगोचर होने का Subject है। जब तक कोई आमिल न मिले, यह चीज हममें है, ठीक, ग्रन्थों पोथियों में इसका ज़िकर है, यह भी ठीक, मिलेगी कब ? जब आप अन्तरमुख इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओगे।

एवड ऊंचा होवे को। तिस ऊंचे को जाणें सो॥

जितना वह सूक्षम और अगम है ना, उतना ही तुम भी हो, उस Level पर आओ, तुम उसको देखने वाले हो जाओगे। अब पिण्ड से ऊपर आना यह Practical मजमून है। अन्तर दाखल होकर चुपचाप बैठ भी गये, थोड़ा आनन्द आया, आगे Way-up तो नहीं हुआ ना। आगे और कदम उठाना है। कई भाई यहीं चुपचाप बैठे रहते हैं, बड़ा आनन्द आ रहा है। ठीक है। आनंद कहां, आंख नहीं खुली तो बेगता मर जायेगा कि नहीं ? तो अन्तर निरत का खुलना भी जरूरी है, और सुरत का चलना भी जरूरी है। यह एक Practical मजमून है। ग्रन्थों पोथियों का पढ़ना, पढ़ने का मजमून हो तो सारी यूनिवर्सिटी भरी पड़ी है। बड़े कालेज हैं। बड़े ज्ञानी है। बड़े और और भी लोग, जिन्होंने ग्रन्थों का स्वाध्याय करके आलिम और फाज़िल बने हैं, मगर यह हकीकत तो अनुभवी पुरूष के हाथ की

मुहताज है। जब तक वह न मिले, चीज़ है हममें, दबी हुई आती है, और दबी हुई चली जाती है।

बिन सबदे जगत बरालिया कहण कछु ना जाये। हर रखे से ऊभरे सबद रहे लिव लाये॥

कहते हैं इस शब्द के पाने के बगैर दुनियाँ सारी बावरी हो रही है, पागल और दीवाना हो जा रही है, हकीकत से दूर जा रही है। कहते हैं फिर ? ''हर राखे से उभरे सबद रहे लिव लाये।'' जिसको परमात्मा बचाना चाहता है, रखना चाहता है, उसको शब्द के साथ जोड़ देता है। शब्द, अशब्द में पहुंचाने का कारण है। वह एक रस्सी है जिसको पकड़कर तुम वहां पहुंच सकते हो जहां से वह आ रही है। Light and sound principle यह दो उस परमात्मा के इज़हार के हैं, अशब्दं Into being आकर, शब्द रूप होकर वह, उसको कब आप Catch कर सकते हैं ? जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। जब तक आप इन्द्रियों के घाट पर बैठे हो वह तुममें है, And that is the true way back to God. वह तुमको अशब्द में पहुंचाने का, जहां से वह आ रहा है वहां पहुंचाने का ज़रिया है। यह है Truth जो सब महात्माओं ने पेश की। तो कहते हैं जिसको परमात्मा मिलाना चाहता है, वह क्या करता है ? उसको शब्द के साथ जोड़ देता है। शब्द से कौन जोड़ सकता है ? जो खुद जुड़ा हुआ है।

कोई जन हरि स्यों देवे जोड़।

तो कहते हैं उसका आखर हशर क्या होता है ?

नानक कर्ता सब किछ जाणदा, जिन रखी बनत बणाये।

कहते हैं वह मालिक जानता है किस तरह Creation का सिलसिला बना रखा है, जो उसके Conscious Co-worker बनते हैं। भई असलयित यह है, शब्द के साथ चलो। एक Electric Lift पर बैठ जाओ, कहां पहुंचोगे ? जहां का उसका Connection है। यह शब्द एक Electric Lift है घट-घट में। इसके साथ लगो। बेअखत्यार, सहज ही में, तुम तरक्की करते चले जाते हो जहां से वह आ रही है। वहां पहुंचने का ज़रिया है। और इसकी Key कहां से मिलती है ? गुरू से !

गुरू कुन्जी पाहुं निबल मन कोठा तन छत ।
गुरू बिन मनका ताक न उगड़े अवर न कुन्जी हत॥

यह Keynote है। एक दफा तुम्हें Link मिल जाये आप Transcend कर जाओ, आगे

Way-up उसकी हिदायत के मुताबिक करलो, जिस हकीकत को उसने पाया है तुम उसको पा सकोगे।

गुरू सिख सिख गुरू है, एको गुरू उपदेश चलाये।

पूरण सिख बनना, वही गुरू बनता है। जो गुरू है वह सिख है, जो सिख है वह गुरू बनेगा। जो पूरण सिख बन गया वह गुरू में समा सकता है। वह गुरूमुख बन सकता है, तो कहते हैं यह है सिलसिला —

बिन सत्गुरू भक्ति न होवई नाम न लगे प्यार।
जन नानक नाम अराधिया गुरू के हेत अपार ॥

कहते हैं बगैर सत्गुरू के भक्ति नहीं हो सकती है। भक्ति की भी तारीफ़ सन्तों ने की है, आम भक्ति प्रेम और प्यार को कहते हैं। मगर प्यार किसका होता है ? जिसका रस मिले, दूसरे का प्यार नहीं, रूचि बन सकती है। पढ़ लिखकर, यह वह, गाना बजाना, प्यार तभी होगा जब किसी का रस मिलेगा। अब भक्ति की क्या तारीफ सन्तों ने की है।

गुरूमुख भक्ति जित सहज धुन उपजै, गत मित तद ही पाये।

जिसके अन्तर वह सहज की ध्वनि उपज आये, यह गुरूमुख की भक्ति है। उसके पाने से इसकी गति हो सकती है। सहज की ध्वनि जो घट-घट में हो रही है, वह कहां से, जहां से आ रही है, श्रुति है, श्रुति जहां से आ रही है, वहां पहुंचायगी ना ! याने गुरूमुख की यह भक्ति की तारीफ़ दी है। अब जिसका रस मिलेगा नहीं, रस मिलेगा तो प्यार पैदा होगा। तो कह रहे हैं कि ''बिन सत्गुरू भक्ति न होवे।'' यह भक्ति बगैर सत्गुरू के नहीं होती। और उसका नतीजा, ''नाम न लगे प्यार।'' रस ही नहीं आया तो प्यार कैसे ? तो आखर क्या कहते हैं ? ''जन नानक नाम अराधिया गुरू के हेत अपार'' कि नाम के हम अराधने वाले बन गये, दिनों दिन तरक्की उस तरफ करेंगे जितना भी गुरू से प्यार बढ़ेगा। क्योंकि गुरू कौन है ? Word was made flesh and dwelt amongst us. वह शब्द मुजस्सम (सदेह) है, जिसको मिलता है उसको शब्द के साथ जोड़ देता है।

तुरत मिलावें नाम से उन्हें मिले जो कोय।

यह तुलसी साहब कहते हैं, याने जो साधु सन्त और महात्मा हैं, उस परमात्मा की जो कचेहरी है ना, सन्त उसके मैम्बर हैं Ministers हैं। तो सन्तों के पास Portfolio मिला है नाम का, राम का, प्रभु के मिलाने का, जो भी जायें फौरन उससे मिलते हैं। चलो भई वापस। सन्तों का काम अपना है, और अवतारों का काम अपना है। कईयों का काम तो

दुनियाँ को, जो अधोगति में जा रही है, उसको ठीक करना, अधर्मियों को दण्ड देना, धर्मियों को उभारना, दुनियाँ को स्थित करना, यह उनका काम है, एक Phase एक Portfolio है। सन्तों के पास Portfolio है, आत्मा को मन इन्द्रियों से आजाद करके नाम के साथ जोड़कर परमात्मा अनाम में पहुंचाना और दुनियां को गैर-आबाद करना है। सन्तों का काम है, Way back to God बिछुड़ी हुई आत्मा का परमात्मा से मिलाना, और औतारों का काम है दुनियाँ को स्थित करना, अधर्मियों को दण्ड देना, धर्मियों को उभारना, मर्यादा को कायम रखना। वह (अवतार) भी सन्तों की कदर करते हैं। दोनों ही एक ही से पावर लेते हैं। एक जगह बिजली आग जला रही है, एक जगह बर्फ जमा रही है। दो Phases (पहलू) हैं, उसी एक पावर के। उनका अपना अपना Function (काम) है। तो सन्तों का अपना Function है। देखिये कमण्डार इन चीफ़ होता है। उनकी बात करने में भी एक फ़र्क रहता है। कमान्डर इन चीफ़ और वायसराय दोनों को कौन Appoint (मुकर्रर) करता है ? The king is the appointing authority. मगर दोनों के Function में फरक है। कमान्डर इन चीफ़ क्या कहता है ? वह देखता है उसकी Appointing Authority. (मुकरर करने वाला) King है, मगर जब लड़ाई होती है, वह कहता है फायर ! यह नहीं कहता कि बादशाह ने हुक्म दिया फायर करो। वह कहता है — I Order, Fire ! (मैं हुकम देता हूं गोली चलाओ)। जब वायसराय हुकम दे तो कहता है, In the name of the King I decide. (कि बादशाह के नाम पर मैं फैसला करता हूं) यही कहता है ना। हालांकि दोनों इस बात का एहसास रखते हैं, कि हम Denote कर रहे हैं ताकत को, हमारे उस निज की तरफ ख्याल करो, भगवान कृष्णजी ने इशारा तो दे दिया। वह निज जो मेरा स्वरूप है। मगर उस Function में महाभारत का युद्ध कर रहे हैं, करा रहे हैं, Direct कर रहे हैं। तो यह Function में फ़रक है। भई हमें तो गर्ज़ से गर्ज़ है। कबीर साहब ने इस सिलसिले को बड़ी खूबसूरती से बयान किया है।

काल अकाल खसम का कीना, यह प्रपन्च बंधावरणा।

कि यह प्रपन्च बनाना था, इसको बढ़ाने के लिये दो ताकतें बनाई। एक Negative, एक Positive.एक काल एक अकाल। समझे ! किसने बनाई ? उसी के हम सब पुजारी हैं। अरे भई जो भी जिस Function (डियूटी, काम) को लेकर आता है, हमारे दिल में उनके लिये इज्ज़त है। शहर में गड़बड़ हो जाये मिलिटरी के हवाले तुम शहर कर देते हो। यह क्या करते हैं ? जो ज़रा हुक्म के बगैर हिला, गोली मार देते हैं। दो, चार, दस दिन स्थिति करके फिर Civil के हवाले कर देते हैं। अब उस गड़बड़ के ज़माने में जब कोई Civil अफसर पासपोर्ट दे दे तो फिर मिलिटरी उसको कुछ नहीं कहती। जाओ भई पास है। तो

सन्तों का पासपोर्ट दिया हुआ, नाम, उसकी अवतार भी कदर करते हैं। वह और नहीं, वह और नहीं। मैं यह अर्ज कर रहा था, ताकत एक है, दो काम, अपने अपने Function, दायरे में हो रहे हैं। और असलियत यह है। तो क्या फरमाते हैं, कि —

बिन सत्गुरू भक्ति न होवई नाम न लगे प्यार।
जन नानक नाम अराधिया गुरू के हेत अपार॥

गुरू के प्यार से, अनुभवी पुरूष के प्यार से, दिनों दिन वह भक्ति बढ़ती है। समझे ! उनका काम हमेशा दुनियाँ को परमात्मा से जोड़ना है, आना जाना खत्म करना है। यह उनका काम रहा है हमेशा से। तो यह कुछ श्लोक थे, आज इतने ही काफी हैं। क्योंकि सन्तों की बाणीं चली जाती है, मतलब तो मतलब से है, कि हम सब उस एक परमात्मा के पुजारी हैं। जब तक हमारी आत्मा मन-इन्द्रियों के घाट पर जिसम-जिसमानियत का, जगत का रूप बनी बैठी है, हम उससे दूर हैं। वह है हममें, मगर हमारा मुख उससे बाहर की तरफ है। सन्त महात्मा मिलते हैं, अन्तरमुख हमको करके, बाहर से हमको हटाकर, उस ज्योति के साथ, उस परिपूर्ण परमात्मा से जोड़ देते हैं। और उसके मिलने से हर एक चीज़ दिल से उतर जाती है।

जब वह रस आवा यह रस नहीं भावा।

दुनियाँ में रहते हुये दुनियाँ से अतीत रहते हैं।

जैसे जल में कमल निरालम मुर्गाई नीसाने।

जैसे जल में कमल रहता हुआ पानी से ऊपर रहता है, जैसे मुर्ग़ाबी जल में रहते हुये पानी के असर को कबूल नहीं करती है, इसी तरह, कहते हैं —

सुरत सबद भव सागर तरिये नानक नाम बखाने॥

जिनकी सुरत पिण्ड से ऊपर आकर शब्द और नाम के रस को लेने वाली बन गई, जैसे मुर्ग़ाबी जल में और कमल पानी में रहकर उसके असर को कबूल नहीं करता, ऐसे ही जीव जिसकी सुरत इस गति को पा गई, वह संसार सागर में रहते हुये इससे, भवसागर से पार हो जाता है। दुनियाँ में रहते हुये भी अतीत रहता है, और मर के भी अतीत रहता है। यह नाम आपके अन्तर में है। नाम कहो, या सबद कहो, तुम्हारे उर में है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आके मिलता है, जो मिला है वह तुमको उसके साथ Contact दे देगा। उसका नाम आप कुछ रख लो। यह एक Self-Evident Truth है जो परम्परा से चली आई है। अगर आज हम गुरूडम के नाम से मुतनफर हैं तो उसका कारण यह है कि जो सचमुच इस गति

के मालिक नहीं वह Acting और Posing कर रहे हैं। मन इन्द्रियों के घाट के गुलाम हैं जाहिर भेख बनाकर दुनियाँ को, पहले अपने आपको, धोखा दे रहे हैं फिर दुनियाँ को धोखा दे रहे हैं। Be True to your own self. मैं हमेशा हर एक भाई को यही कहता हूं भई अपने आपके सामने सच्चे बनो। Don't deceive your own self (अपने आपको धोखा न दो) जो तुम हो, वही दुनियाँ को बतलाओ। दुनियाँ भी धोखे से बच जायेगी, तुम भी धोखे से बच जाओगे। जो दूसरों को धोखा देता है वह पहले अपने आपको धोखा देता है। अगर हमको एक चीज नहीं मिली, याज्ञवल्क ने साफ कहा कि मैं अनुभवी नहीं हूं। तुम भी कह दो नहीं हो। झगड़ा ही पाक हो जाये, गुरूडम बदनाम न हो। क्योंकि Acting हो रही है, कोई नहीं कहता है कि मेरी छाछ खट्टी है। आ गये, बच्चा तेरी कल्याण है, बस। बेड़ा गरक हो गया, अपना तो हो गया, जो साथ लगे उसका भी हो गया। अनुभवी पुरूषों को बाज वक्त लोगों की हालत अधोगति में जाते हुये देख कर बड़ा रहम आता है। कबीर साहब ने एक पण्डित को कहा था।

तू तो रंडी फिरे विहन्डी।

तू रंडी है, तेरा पति ही कोई नहीं है, तूने कभी उसको हन्डा भी नहीं है, अरे भई अपना जीवन बरबाद कर लिया, दूसरे लोगों का क्यों बर्बाद कर रहे हो ? उनको कहना पड़ता है, क्या करे। सच्ची बात तो यही है। वह किसी को बुरा नहीं कहते हैं, मगर जब जीवों का अकाज देखते हैं, जान बूझकर जो Business ब्योहार बना रहे हैं, उनका फिर क्या करेंगे ? वह इसीलिये कहते हैं। सच्चे गुरू को कोई नहीं पूछता, झूठे गुरू की सब कोई पूजा करते हैं। सच्ची बात तो यही है। तुलसी साहब ने बड़ा एक Criterion (कसौटी) दिया है सच्चे साधू का —

गुरू निवे जो शिष्य को साध कहावे सोय।

कहते हैं आखरी जाकर यह श्लोक कि जो गुरू शिष्य को नमस्कार करता है, वह साधु है। हम क्या करते हैं ? जो गुरू बनता है, वह अकड़ा रहता है, और दूसरे आकर मत्था टेकते हैं। उसका सिर नीचा नहीं होता। अरे भई अगर शिष्य मत्था न टेके तो कोई बात नहीं। उसकी आंख नहीं खुली है अभी। अरे भई तुम्हारी तो खुली है ? वह सब घट में है। बड़ा भारी Criterion दिया है। तो जो अनुभवी पुरूष है, उसकी सोहबत में आपको चीज़ मिलेगी भई जो उसको मिली है। जो नहीं मिली तो क्या देगा ?

जिसदा साहब भुक्खा नंगा होवे। तिसदा नफ़र कित्थों रज खाये॥

जिसका साहब नंगा और भूखा है, तुम उसकी गुलामी करोगे, तुमको खाने को कहां मिलेगा ? किसी महापुरूष की बाणी लो, बात वही कहेंगे। ग़ौर से सुनिये। साई बुल्लेशाह क्या कहते हैं ?

माये न मुड़दा इश्क दीवाना शौह नाल प्रीता ला के।
इश्क शराबी लग गई बाजी खेडां मैं दाव लगा के।
मारण बोली ते बोल न बोलां ना सुणां मैं कन लगा के।

लोग बुरा कहें या भला कहें लोग बिचारों ने अपनी आंखों के Level से कहना है। उन बिचारों का भी क्या कसूर है। अगर उनकी आंख नहीं खुली तो उनका भी क्या कसूर है।

वेहड़े बिच शैतान नचेंदा ओस नू रख समझा के।
तोड़ सरां नू जित लई बाजी ओ तां फिरदी है नक वढा के।
मैं वे अंयाणी खेड बिगुचियाँ खेडां मैं आके बाके।
यह खेड़ा सब हुण लगदियां झेडां हुण घर बिच पिया पाके।

एक स्त्री है, उसकी शादी हो गई, अब वह गुडी गुडे को क्या करेगी ? गुडी गुडे से तो सीखा शादी होकर यह तुम्हारे फरायज (काम) हैं, मगर जब अपनी शादी हो गई तब गुडी गुडे कौन पूछे ? समझे।

सइयां नाल मैं पावाँ गिदड़ा दिलबर लुक लुक झांके।
पुच्छो नी एह क्यों शर्मान्दा जान्दा न भेद बता के।
काफ़र काफ़र आखण मैनूं सारे लोक सुणा के।

खुसरो साहब कहते हैं —

खल्फ मी गोयद के खुसरो बुतपरस्ती मेकुनद।
आरे आरे मेकुनम बाखलको आलम कार नेस्त॥

दुनियाँ कहती है, खुसरो बुत-परस्त हो गया। अरे भई बुत-परस्त ही सही, उस जलवे में, उस बुत में हमें वह जलवा नजर आ रहा है। एक शायर ने कहा। 'हरगिज़ मगो कि काबा अज़ बुतख़ाना बेहतर अस्त', यह कभी न कहो, कि काबा बुतख़ाने से अच्छा है। अरे भई दोनों ही काबिले यादगार चीज़ हैं। वह हज़रत इबराहीम का बुतख़ाना था, हजरत मुहम्मद साहब ने उसको हजरत इबराहीम की यादगार होने के सबब से उसको चूमा, इसलिये आज काबा है। इसी तरह हिन्दू भाईयों का खास चिन्ह बनाकर उसकी यादगार

बना रखी है। कहते हैं तुम्हारी नज़र में कौन सा अच्छा है फिर दोनों में ?

हर जा कि हस्त जलवाये जानाना बेहतर अस्त।

जहां पर उस परमात्मा का जलवा इजहार कर रहा है, वह सबसे बेहतर है। अरे भई वह वह जिसम है जिसके अन्तर वह परमात्मा प्रगट हो गया, वह हर एक जगह उसको देख रहा है। उसने जहां जहां पांव रखा, वह जगह यादगारें बन गई, तीर्थ स्थान बन गये।

काफर काफर आखण मैंनूं सारे लोग सुणा के।
मोमिन काफर मैंनूं दोय न दिसदे इबादत दे घर आके॥

सबके अन्तर वही नज़र आ रहा है, अब मोमिन कौन और काफ़िर कौन ? जो काफ़िर है, उसके अन्तर भी तो परमात्मा है कि नहीं ? जिसकी आंख खुल गई उसको —

यह संसार जो तू देखदा हर का रूप है। हर रूप नदरी आया।
माये ना मुड़दा इश्क दीवाना, मुर्शिद नाल प्रीता ला के।
चोली चुन्नी ते फ़ूकियां मैं, झगा धोती शरक जला के।
दारू कुफ़र उड़ाई दिल थीं, तली ले सीस झुका के।

भई इस तरफ जो भी जाता है ना, सीस से गुज़रकर जाता है।

जे तोय प्रेम खेलन का चाव। सिर धर तली गली मोरी आव॥
इत मार्ग पैर धरीजे। सिर दीजे काण न कीजे॥

याद भी न करो कि सिर दिया है। यह कोई बड़ाई में हैं ? क्योंकि शुकर है सिर दे कर भी वह मिले, फिर भी सस्ता जान। सिर का देना क्या है ? खुदी का नाश होना। बस।

मैं बड़भागी मारिया मन ख़ाविन्द, हत्थीं जहर पिला के।

हम सब मन के गुलाम हैं, वही हमारा पति बना पड़ा है, कहते हैं मन खत्म हो गया अपने हाथों से। गुरू की दया से यह मन की गुलामी गई प्रभु का सच्चा सुहाग पा गये।

तो यह बुल्लेशाह का कलाम है, मतलब तरीका बयान है, इजहार का, कि आत्मा का विसाल (मिलन) जब तक प्रभु के साथ नहीं होता, शान्ति नहीं होती है, सच्ची शान्ति तब ही होती है, जब आत्मा का परमात्मा के साथ विसाल हो जाये। ❑

✦ ✧ ✦